NCERT कक्षा XII इतिहास | थीम 4: विचारक, विश्वास और भवन CBSE + UPSC अभ्यास सांस्कृतिक विकास c. 600 ईसा पूर्व – 600 ईस्वी CLASS ORB .COM

SECTION A — बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) [50 प्रश्न]

निर्देश प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्प (a), (b), (c), (d) हैं। सही उत्तर प्रत्येक प्रश्न के बाद **बोल्ड** में दिया गया है। UPSC शैली के अभ्यास के लिए पहले स्वयं उत्तर दें, फिर जांचें। CBSE बोर्ड में प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का है।

Q1. NCERT कक्षा XII इतिहास में थीम 4 (विचारक, विश्वास और भवन) का प्रमुख केंद्र कौन-सा स्थल है?

(a) अमरावती (b) तक्षशिला (c) **सांची** (d) बोध गया

उत्तर: (c) सांची — मध्य प्रदेश के सांची में स्थित स्तूप परिसर इस अध्याय का केंद्रीय केंद्र है।

Q2. सांची के संरक्षण के लिए धन प्रदान करने वाली भोपाल की बेगमें कौन थीं?

(a) रजिया सुल्ताना और नूर जहां (b) **शाहजहाँ बेगम और सुल्तान जहां बेगम** (c) मुमताज महल और जेबुन्निसा (d) चांद बीबी और दुर्गावती

उत्तर: (b) शाहजहाँ बेगम और सुल्तान जहां बेगम ने सांची के संरक्षण, संग्रहालय और जॉन मार्शल की प्रकाशनों के लिए धन उपलब्ध कराया।

Q3. सांची का स्तूप यूरोपियनों द्वारा किस वर्ष 'खोजा' गया?

(a) 1796 (b) **1818** (c) 1854 (d) 1914

उत्तर: (b) 1818 — उस समय इसके चार द्वारों में से तीन अभी भी खड़े थे।

Q4. 1854 में अमरावती का दौरा किसने किया और मूर्ति पैनलों को एकत्र किया जिन्हें अब 'एलियट मार्बल्स' कहा जाता है?

(a) जेम्स फर्ग्यूसन (b) अलेक्जेंडर कनिंघम (c) **वॉल्टर एलियट** (d) एच.एच. कोल

उत्तर: (c) वॉल्टर एलियट, गुंटूर के कमिश्नर, 1854 में अमरावती गए थे।

Q5. 1880 में प्राचीन स्मारकों के क्यूरेटर के रूप में किसकी नियुक्ति हुई और उन्होंने इन सिटू संरक्षण की वकालत की?

(a) जॉन मार्शल (b) **एच.एच. कोल** (c) जेम्स फर्ग्यूसन (d) अलेक्जेंडर कनिंघम

उत्तर: (b) एच.एच. कोल — उन्होंने लिखा कि देश को लूटने की अनुमति देना 'आत्मघाती और असमर्थनीय' है।

Q6. सांची को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल कब घोषित किया गया?

(a) 1955 (b) 1976 (c) **1989** (d) 2001

उत्तर: (c) 1989।

Q7. सांची के पूर्वी द्वार को ले जाने के लिए सबसे पहले किस देश के विद्वानों ने इच्छा जताई?

OM SIKARWAR

(a) ब्रिटिश (b) **फ्रेंच** (c) जर्मन (d) इटालियन

उत्तर: (b) फ्रेंच — वे फ्रांस के एक संग्रहालय में प्रदर्शन के लिए पूर्वी द्वार ले जाना चाहते थे।

Q8. मध्य-प्रथम सहस्राब्दी ईसा पूर्व को एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है क्योंकि:

(a) मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुई (b) **महावीर, बुद्ध, सुकरात और प्लेटो जैसे विचारक उभरे** (c) गुप्त काल शुरू हुआ (d) वेदों का संकलन हुआ

उत्तर: (b) — इस काल में विश्व भर में विचारक उभरे — जरथुस्त्र, कन्फ्यूशियस, सुकरात, प्लेटो, महावीर, बुद्ध।

Q9. कुटोगरशाला क्या थी?

(a) बौद्ध स्तूप (b) जैन मंदिर (c) **एक नुकीली छत वाली झोपड़ी जहां घुमक्कड़ संन्यासी ठहरते थे** (d) राजमहल

उत्तर: (c) — कुटोगरशाला वह स्थान था जहां घुमक्कड़ शिक्षक रुकते थे और एक-दूसरे तथा साधारण लोगों से वाद-विवाद करते थे।

Q10. बौद्ध ग्रंथों में मध्य-प्रथम सहस्राब्दी ईसा पूर्व में कितने संप्रदायों या विचार धाराओं का उल्लेख है?

(a) 16 (b) 32 (c) **64** (d) 108

उत्तर: (c) 64 संप्रदाय या विचार धाराएँ बौद्ध ग्रंथों में उल्लिखित हैं।

Q11. जैन परंपरा के अनुसार, महावीर से पहले कितने अन्य तीर्थंकर हुए?

(a) 12 (b) **23** (c) 24 (d) 32

उत्तर: (b) 23 तीर्थंकर महावीर से पहले हुए।

Q12. जैन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण विचार क्या है?

(a) वेदों से असंबद्धता (b) **संपूर्ण विश्व सजीव है — अहिंसा केंद्रीय है** (c) ईश्वर ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता है (d) भक्ति मुक्ति प्रदान करती है

उत्तर: (b) — संपूर्ण विश्व सजीव है (पत्थर और चट्टानों में भी जीवन है) — इसलिए **अहिंसा** (अनहिंसा) केंद्रीय सिद्धांत है।

Q13. जैन भिक्षु और भिक्षुणियाँ कितने व्रत लेते हैं?

(a) तीन (b) चार (c) **पाँच** (d) आठ

उत्तर: (c) पाँच व्रत: प्राणी-हत्या न करना, झूठ न बोलना, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह (संपत्ति न रखना)।

Q14. जैन धर्म में जन्म और पुनर्जन्म का चक्र किससे निर्धारित होता है?

(a) ईश्वर की इच्छा (b) **कर्म** (c) भक्ति (d) प्रार्थना

उत्तर: (b) कर्म — कर्म भविष्य के अस्तित्व को निर्धारित करते हैं।तपस्या और कठोर साधना कर्म-बंधन को तोड़ती है।

Q15. उत्तराध्ययन सूत्र नामक जैन ग्रंथ में किस रानी का वर्णन है जो अपने पति को संसार त्यागने के लिए मनाने की कोशिश कर रही थी?

OM SIKARWAR

(a) द्रौपदी (b) **कमलावती** (c) प्रभावती (d) यशोधरा

उत्तर: (b) रानी कमलावती ने इस जैन ग्रंथ में अपने पति को संसार त्यागने के लिए मनाने की कोशिश की।

Q16. बुद्ध का मूल नाम क्या था?

(a) वर्धमान (b) आनंद (c) **सिद्धार्थ गौतम** (d) अजातशत्रु

उत्तर: (c) सिद्धार्थ गौतम — वे शाक्य गण के एक प्रमुख के पुत्र थे।

Q17. सिद्धार्थ गौतम को अपनी यात्रा के दौरान कौन-सी तीन दृश्यों ने विचलित किया?

(a) भिखारी, पुजारी और आग (b) **बूढ़ा आदमी, बीमार आदमी और शव** (c) भिक्षु, नदी और वृक्ष (d) राजा, सैनिक और युद्ध

उत्तर: (b) — इन दृश्यों ने उन्हें दुख की अनिवार्यता का बोध कराया।

Q18. बुद्ध ने अपना पहला उपदेश कहाँ दिया?

(a) लुम्बिनी (b) बोध गया (c) **सारनाथ** (d) कुशीनगर

उत्तर: (c) सारनाथ — इस पहले उपदेश को चक्र (धर्मचक्र) प्रतीक द्वारा दर्शाया जाता है।

Q19. बौद्ध दर्शन में 'अनित्यता' (transience) के लिए पाली शद्ब कौन-सा है?

(a) दु:ख (b) अनात्मा (c) **अनिच्च** (d) निर्वाण

उत्तर: (c) अनिच्च — संसार अनित्य और निरंतर परिवर्तनशील है।

Q20. 'अनात्मा' (soullessness) के अर्थ में कौन-सा पाली शद्ब है — संसार में कुछ भी स्थायी या शाश्वत नहीं है?

(a) अनिच्च (b) **अनात्मा** (c) दु:ख (d) मैत्री

उत्तर: (b) अनात्मा — बौद्ध दर्शन में आत्मा की अनुपस्थिति का अवधारणा।

Q21. प्रारंभिक बौद्ध धर्म में ईश्वर के अस्तित्व को क्या माना गया?

(a) सभी शिक्षाओं का केंद्र (b) **अप्रासंगिक** (c) पूर्णतः नकारा गया (d) ब्रह्म के रूप में स्वीकार किया गया

उत्तर: (b) अप्रासंगिक — ईश्वर का अस्तित्व हो या न हो, प्रारंभिक बौद्ध धर्म में इसे अप्रासंगिक माना गया।

Q22. सुत्त पिटक में क्या शामिल है?

(a) भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए मठ नियम (b) **बुद्ध की शिक्षाएँ** (c) दार्शनिक और अमूर्त विषय (d) बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएँ

उत्तर: (b) सुत्त पिटक में बुद्ध की शिक्षाएँ शामिल हैं।

Q23. बुद्ध द्वारा स्थापित भिक्षुओं का संगठन क्या कहलाता था?

(a) **संघ** (b) गोत्र (c) सभाएँ (d) समिति

उत्तर: (a) संघ — भिक्षुओं का समुदाय जो धम्म के शिक्षक बने।

Q24. भिक्षा पर निर्भर रहने वाले बौद्ध भिक्षु किस नाम से पुकारे जाते थे?

OMSIKARWAR

(a) थेरियाँ (b) **भिक्षु** (c) गृहपति (d) तीर्थंकर

उत्तर: (b) भिक्षु (पुरुष भिक्षु) |स्त्री भिक्षुओं को **भिक्षुणी** कहा जाता था।

Q25. पहली महिला जिसे भिक्षुणी के रूप में दीक्षा दी गई, कौन थी?

(a) थेरिगाथा (b) पुन्ना (c) **महापजापति गोतमी** (d) धनावती

उत्तर: (c) महापजापति गोतमी, बुद्ध की धाय माँ — आनंद की मध्यस्थता से दीक्षा प्राप्त की।

Q26. थेरिगाथा क्या है?

(a) पुरुष भिक्षुओं द्वारा रचित छंदों का संग्रह (b) **भिक्षुणियों (स्त्री भिक्षुओं) द्वारा रचित छंदों का संग्रह** (c) मठ नियमों का ग्रंथ (d) बुद्ध की जीवनी

उत्तर: (b) — थेरिगाथा सुत्त पिटक का एक अनोखा बौद्ध ग्रंथ है जिसमें भिक्षुणियों द्वारा रचित छंद हैं।

Q27. थेरिगाथा में पुन्ना को किस रूप में वर्णित किया गया है?

(a) रानी (b) ब्राह्मणी (c) **दासी (गुलाम महिला)** (d) व्यापारी की पुत्री

उत्तर: (c) दासी — जो प्रतिदिन सुबह अपने स्वामी के घर के लिए पानी लाने नदी जाती थी।

Q28. विनय पिटक में क्या शामिल है?

(a) बुद्ध की शिक्षाएँ (b) जातक कथाएँ (c) **भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए नियम और विनियम** (d) दार्शनिक चर्चाएँ

उत्तर: (c) — संघ में शामिल होने वालों के लिए नियम।

Q29. 'चैत्य' शद्ब संभवतः किससे व्युत्पन्न है?

(a) 'महान' के लिए संस्कृत शद्ब (b) **'चिता' शद्ब से, जिसका अर्थ श्मशान की चिता है** (c) जैन तीर्थंकर का नाम (d) नदी के लिए पाली शद्ब

उत्तर: (b) — चैत्य 'चिता' (श्मशान की चिता) से व्युत्पन्न हो सकता है और बाद में शव-माउंड के अर्थ में प्रयुक्त हुआ।

Q30. अशोकावदान के अनुसार, बुद्ध के अवशेषों को प्रत्येक महत्वपूर्ण नगर में किसने वितरित किया?

(a) चंद्रगुप्त मौर्य (b) हर्ष (c) **अशोक** (d) कनिष्क

उत्तर: (c) अशोक — और उन्होंने उन पर स्तूप बनाने का आदेश दिया।

Q31. स्तूप के किस भाग को 'देवताओं के निवास का प्रतिनिधित्व करने वाली बालकनी जैसी संरचना' कहा गया है?

(a) अंड (b) यष्टि (c) **हरमिका** (d) वेदिका

उत्तर: (c) हरमिका — यह अंड (गुंबद) के ऊपर स्थित होती है और देवताओं के निवास को दर्शाती है।

Q32. स्तूप की वेदिका क्या है?

(a) गुंबद (b) **माउंड को घेरने वाली पत्थर की रेलिंग** (c) ऊपर का छत्र (d) द्वार

OM SIKARWAR

उत्तर: (b) — वेदिका प्राचीन बाँस या लकड़ी की बाड़ जैसी दिखती है।

Q33. स्तूप के द्वारों को क्या कहा जाता है?

(a) शिखर (b) **तोरण** (c) छत्री (d) मंडप

उत्तर: (b) तोरण — चारों दिशाओं में स्थित सुंदर नक्काशीदार द्वार।

Q34. स्तूप में प्रवेश करने वाले उपासक किस दिशा में घूमते थे?

(a) घड़ी की विपरीत दिशा (b) **घड़ी की दिशा में, सूर्य की गति की नकल करते हुए** (c) केवल बाएँ से दाएँ (d) कोई विशेष दिशा नहीं

उत्तर: (b) — आकाश में सूर्य की गति की नकल करते हुए।

Q35. प्रारंभिक बौद्ध मूर्तिकारों ने बुद्ध को मानव रूप में नहीं दर्शाया। इसके बजाय उन्होंने उपयोग किया:

(a) केवल कमल के फूल (b) **प्रतीक जैसे खाली आसन, स्तूप, चक्र और बोधि वृक्ष** (c) यूनानी शैली की मूर्तियाँ (d) केवल अभिलेख

उत्तर: (b) — खाली आसन ध्यान के लिए, स्तूप महापरिनिर्वाण के लिए, चक्र पहले उपदेश के लिए, बोधि वृक्ष ज्ञान प्राप्ति के लिए।

Q36. बौद्ध मूर्तिकला में चक्र (धर्मचक्र) क्या दर्शाता है?

(a) बुद्ध का ज्ञानोदय (b) बुद्ध का जन्म (c) **सारनाथ में पहला उपदेश** (d) बुद्ध की मृत्यु

उत्तर: (c) — बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के बाद सारनाथ में दिया गया पहला उपदेश।

Q37. उस स्त्री के चित्रण को क्या कहा जाता है जिसके स्पर्श से वृक्ष फल-फूल से लद जाते थे?

(a) गजशलभंजिका (b) **शलभंजिका** (c) थेरिगाथा मोटिफ (d) गजलक्ष्मी

उत्तर: (b) शलभंजिका — सांची में बौद्ध कला में समाहित एक पूर्व-बौद्ध लोकप्रिय परंपरा।

Q38. जेम्स फर्ग्यूसन, प्रारंभिक आधुनिक कला इतिहासकार, ने निष्कर्ष निकाला कि सांची किसका केंद्र था?

(a) वैष्णववाद (b) शैववाद (c) **वृक्ष और सर्प पूजा** (d) देवी पूजा

उत्तर: (c) — क्योंकि उन्होंने बौद्ध साहित्य नहीं पढ़ा था और केवल छवियों के आधार पर निर्णय लिया।

Q39. अजंता गुफाओं में चित्रण कहाँ किया गया है?

(a) पत्थर की पट्टिकाओं पर (b) कांस्य पट्टिकाओं पर (c) **गुफाओं की दीवारों पर** (d) ताड़ पत्रों पर

उत्तर: (c) — जातक कथाएँ, दरबारी जीवन, जुलूस आदि दर्शाते हुए।

Q40. बौद्ध धर्म में नया विचार (लगभग 1वीं शताब्दी ईस्वी) जिसमें बुद्ध को उद्धारक माना गया, क्या कहलाता है?

(a) थेरवाद (b) हीनयान (c) **महायान** (d) वज्रयान

उत्तर: (c) महायान — शाब्दिक अर्थ 'महान वाहन'। इसमें बोधिसत्त्व की अवधारणा विकसित हुई।

Q41. पुराने बौद्ध परंपरा के अनुयायी स्वयं को क्या कहते थे?

(a) हीनयान (b) **थेरवाद** (c) महायान (d) वज्रयान

उत्तर: (b) थेरवाद — वे पुराने, सम्मानित शिक्षकों (थेरों) के मार्ग का अनुसरण करने वाले थे।हीनयान' शद्व महायान समर्थकों द्वारा प्रयोग किया गया।

Q42. बोधिसत्त्व क्या है?

(a) बौद्ध ग्रंथ (b) स्तूप का एक रूप (c) **एक अत्यंत करुणामय प्राणी जो दूसरों को मुक्ति दिलाने में मदद करता है** (d) जैन मंदिर का प्रकार

उत्तर: (c) — महायान बौद्ध धर्म में बोधिसत्त्व वह प्राणी है जो पुण्य संचय करता है लेकिन उसे दूसरों की मदद के लिए उपयोग करता है, न कि केवल स्वयं की निर्वाण प्राप्ति के लिए।

Q43. वैष्णववाद में भक्त और ईश्वर के बीच संबंध को किस रूप में कल्पित किया गया?

(a) भय और सम्मान (b) **प्रेम और भक्ति (भक्ति)** (c) अनुष्ठानिक बलिदान (d) दार्शनिक वाद-विवाद

उत्तर: (b) — भक्ति की अवधारणा जो वैष्णववाद और शैववाद में मजबूती से विकसित हुई।

Q44. वैष्णववाद में विष्णु के कितने अवतार (incarnations) मान्य थे?

(a) पाँच (b) सात (c) **दस** (d) बारह

उत्तर: (c) दस अवतार — विभिन्न रूप जिन्हें देवता ने विश्व को बुराई से बचाने के लिए धारण किया।

Q45. शिव को कला में मुख्य रूप से किस प्रतीक द्वारा दर्शाया गया?

(a) कमल (b) चक्र (c) **लिंग** (d) मोर

उत्तर: (c) लिंग — हालांकि शिव को कभी-कभी मानव रूप में भी दर्शाया गया।

Q46. प्रारंभिक हिंदू मंदिर का आंतरिक गर्भगृह जहाँ देवता की मूर्ति रखी जाती थी, क्या कहलाता है?

(a) शिखर (b) मंडप (c) **गर्भगृह** (d) तोरण

उत्तर: (c) गर्भगृह — शाब्दिक अर्थ 'गर्भ कक्ष'; एक छोटा वर्गाकार कमरा जिसमें एक ही द्वार होता है।

Q47. मंदिर के गर्भगृह के ऊपर बनाई गई ऊँची मीनार को क्या कहा जाता है?

(a) तोरण (b) **शिखर** (c) हरमिका (d) वेदिका

उत्तर: (b) शिखर — बाद की मंदिर वास्तुकला में यह क्रमशः ऊँचा होता गया।

Q48. बाराबर गुफाएँ (बिहार) अशोक के आदेश पर किस संप्रदाय के सदस्यों के लिए बनाई गई थीं?

(a) बौद्ध भिक्षु (b) जैन भिक्षु (c) **आजीविक संप्रदाय** (d) वैदिक पुजारी

उत्तर: (c) आजीविक संप्रदाय — भारत में गुफा परंपरा की सबसे प्रारंभिक।

Q49. एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर उल्लेखनीय क्यों है?

(a) यह भारत का सबसे पुराना मंदिर है (b) **यह एक ही चट्टान से तराशा गया है** (c) इसे अशोक ने बनवाया (d) इसमें भारत का सबसे बड़ा लिंग है

उत्तर: (b) — 8वीं शताब्दी ईस्वी में पूरी तरह एक ही चट्टान से तराशा गया।ताम्रपत्र अभिलेख में मूर्तिकार का आश्चर्य दर्ज है।

OMSIKARWAR

Q50. महाबलीपुरम (तमिलनाडु) का रॉक-कट मूर्तिकला पैनल कला इतिहासकारों द्वारा किसके रूप में विवादित है?

(a) कुरुक्षेत्र का युद्ध (b) **या तो गंगा का स्वर्ग से अवतरण अथवा अर्जुन की तपस्या (महाभारत)** (c) महावीर का जीवन (d) रामायण में सीता की मुक्ति की कथा

उत्तर: (b) — कला इतिहासकार गहराई से विभाजित हैं — कुछ गंगा अवतरण देखते हैं, कुछ महाभारत से अर्जुन की तपस्या।

SECTION B — रिक्त स्थान भरें [20 प्रश्न]

निर्देश प्रत्येक रिक्त स्थान में सही शद्ब या वाक्यांश भरें।उत्तर प्रत्येक प्रश्न के नीचे बोल्ड में दिए गए हैं।

Q1. सांची का स्तूप मध्य प्रदेश के _____ शहर के निकट स्थित है।

उत्तर: भोपाल (भोपाल से लगभग 20 मील उत्तर-पूर्व में)

Q2. भोपाल के शासकों — _____ और _____ — ने सांची के संरक्षण के लिए धन उपलब्ध कराया।

उत्तर: शाहजहाँ बेगम और सुल्तान जहां बेगम

Q3. वॉल्टर एलियट ने 1854 में अमरावती से मूर्ति पैनल एकत्र किए; इन पैनलों को _____ कहा जाने लगा।

उत्तर: एलियट मार्बल्स

Q4. एच.एच. कोल ने वकालत की कि मूल कलाकृतियों को _____ संरक्षित किया जाना चाहिए — अर्थात् उसी स्थान पर जहाँ वे मिली थीं।

उत्तर: इन सिटू (in situ)

Q5. जैन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण विचार यह है कि संपूर्ण विश्व सजीव है, और इसलिए _____ (अहिंसा) केंद्रीय है।**उत्तर: अहिंसा**

Q6. जैन परंपरा के अनुसार, महावीर से पहले _____ अन्य तीर्थंकर हुए।

उत्तर: 23

Q7. बुद्ध का मूल नाम _____ था।

उत्तर: सिद्धार्थ गौतम

Q8. सिद्धार्थ को विचलित करने वाले तीन दृश्य थे — एक बूढ़ा आदमी, एक बीमार आदमी, और एक _____. **उत्तर: शव**

Q9. बुद्ध ने अपना पहला उपदेश _____ दिया, और इस घटना को चक्र (धर्मचक्र) द्वारा प्रतीकित किया जाता है।**उत्तर: सारनाथ**

Q10. पाली शद्ब _____ का अर्थ 'दुःख' है — यह बौद्ध दर्शन में मानवीय अस्तित्व का अंतर्निहित तत्व है।

उत्तर: दुःख

OM SIKARWAR

Q11. बुद्ध द्वारा स्थापित भिक्षुओं का संगठन _____ कहलाता है।

उत्तर: संघ

Q12. भिक्षा पर जीवनयापन करने वाले बौद्ध पुरुष भिक्षुओं को _____ कहा जाता था।

उत्तर: भिक्षु

Q13. थेरिगाथा _____ (स्त्री भिक्षुओं) द्वारा रचित छंदों का संग्रह है।

उत्तर: भिक्षुणियों

Q14. 'चैत्य' शद्ब 'चिता' से व्युत्पन्न हो सकता है, जिसका अर्थ _____ है — और विस्तार से शव-माउंड।

उत्तर: श्मशान की चिता (funeral pyre)

Q15. स्तूप का गुंबद _____ कहलाता है; इसके ऊपर वाली बालकनी जैसी संरचना _____ कहलाती है।

उत्तर: अंड; हरमिका

Q16. स्तूप के चारों प्रमुख दिशाओं में स्थित सुंदर नक्काशीदार द्वारों को _____ कहा जाता है।

उत्तर: तोरण

Q17. महायान बौद्ध धर्म में नए विचार ने बुद्ध को एक _____ के रूप में देखा जो मुक्ति सुनिश्चित कर सकता था।

उत्तर: उद्धारक (saviour)

Q18. वैष्णववाद में भक्त और ईश्वर के बीच संबंध को _____ के रूप में कल्पित किया गया — प्रेम और भक्ति।

उत्तर: भक्ति

Q19. प्रारंभिक हिंदू मंदिर का आंतरिक कक्ष, जहाँ देवता की मूर्ति रखी जाती थी, _____ कहलाता है।

उत्तर: गर्भगृह

Q20. एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर प्रसिद्ध है क्योंकि पूरी संरचना एक _____ चट्टान से तराशी गई है।

उत्तर: एकल (single)

SECTION C — एक-शद्ब या एक-वाक्य उत्तर [20 प्रश्न]

निर्देश प्रत्येक प्रश्न का उत्तर केवल **एक शद्ब** या **एक वाक्य** में दें। ये त्वरित पुनरीक्षण और CBSE 1-अंक के प्रश्नों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

Q1. बौद्ध साहित्य की 'तीन टोकरियों' के लिए संस्कृत/पाली शद्ब क्या है?

उत्तर: तिपिटक (या त्रिपिटक)।

OM SIKARWAR

Q2. किसी संत या धार्मिक नेता की जीवनी के लिए किस शद्ब का प्रयोग होता है?

उत्तर: हागियोग्राफी (Hagiography)।

Q3. बौद्ध धर्म में भिक्षुणी के रूप में दीक्षा पाने वाली पहली महिला कौन थी?

उत्तर: महापजापति गोतमी (बुद्ध की धाय माँ)।

Q4. बौद्ध दर्शन में 'अनात्मा' (soullessness) की अवधारणा के लिए पाली शद्ब क्या है?

उत्तर: अनत्ता।

Q5. विनय पिटक का नाम लीजिए — एक वाक्य में बताइए कि इसमें क्या शामिल है?

उत्तर: इसमें संघ में शामिल होने वालों (भिक्षुओं और भिक्षुणियों) के लिए नियम और विनियम शामिल हैं।

Q6. बाराबर गुफाएँ (बिहार) अशोक के आदेश पर किस संप्रदाय के लिए बनाई गई थीं?

उत्तर: आजीविक संप्रदाय।

Q7. हिंदू मंदिर का आंतरिक गर्भगृह क्या कहलाता है?

उत्तर: गर्भगृह।

Q8. सांची में पाए गए उस स्त्री के चित्रण का नाम बताइए जिसके स्पर्श से वृक्ष फूल और फल से लद जाते थे।

उत्तर: शलभंजिका।

Q9. एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर किस शताद्बी ईस्वी में तराशा गया था?

उत्तर: 8वीं शताद्बी ईस्वी।

Q10. धरोहर संरक्षण के संदर्भ में 'इन सिटू' का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कलाकृतियों को उसी स्थान पर संरक्षित करना जहाँ वे मिली थीं, बजाय उन्हें हटाने के।

Q11. उस पुरातत्वविद् का नाम बताइए जिन्होंने 1854 में भilsa टोपेस (सांची पर प्रारंभिक कार्यों में से एक) प्रकाशित किया।

उत्तर: अलेक्जेंडर कनिंघम।

Q12. हिंदू मंदिर के मुख्य देवालय के ऊपर बनी ऊँची मीनार का नाम क्या है?

उत्तर: शिखर।

Q13. प्रारंभिक बौद्ध मूर्तिकला में खाली आसन प्रतीक क्या दर्शाता है?

उत्तर: बुद्ध का ध्यान।

Q14. बौद्ध मूर्तिकला में चक्र (धर्मचक्र) क्या दर्शाता है?

उत्तर: सारनाथ में बुद्ध का पहला उपदेश।

Q15. उस जैन ग्रंथ का नाम बताइए जिसमें रानी कमलावती अपने पति को संसार त्यागने के लिए मनाने की कोशिश करती है।

OM SIKARWAR

उत्तर: उत्तराध्ययन सूत्र।

Q16. बौद्ध विचारधारा में 'दु:ख' का क्या अर्थ है?

उत्तर: दु:ख का अर्थ है sorrow (दुख) — यह मानवीय अस्तित्व का अंतर्निहित तत्व है।

Q17. बौद्ध धर्म में 'थेरियाँ' कौन थीं?

उत्तर: थेरियाँ सम्मानित महिला भिक्षुणियाँ थीं जिन्होंने मुक्ति प्राप्त कर ली थी।

Q18. पाली शब्द 'अनिच्च' का प्रयोग किसके वर्णन के लिए किया जाता है?

उत्तर: अनिच्च का अर्थ है अनित्यता — संसार अनित्य और निरंतर परिवर्तनशील है।

Q19. सांची को विश्व धरोहर स्थल कब घोषित किया गया?

उत्तर: 1989।

Q20. स्तूप की वेदिका क्या है?

उत्तर: वेदिका स्तूप के माउंड को घेरने वाली पत्थर की रेलिंग है।

अनुभाग D — अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ) [20 प्रश्न, प्रत्येक लगभग 50 शब्द]

प्रश्न 1. स्तूप क्या है और इसे क्यों बनाया जाता था?

उत्तर: स्तूप एक टीलेनुमा संरचना होती थी, जिसे बुद्ध या अन्य पूजनीय गुरुओं के अवशेषों पर बनाया जाता था। इसकी उत्पत्ति बौद्ध-पूर्व परंपरा से हुई, जिसमें कुछ प्राकृतिक स्थानों को पवित्र माना जाता था। बौद्ध धर्म में स्तूप पवित्र अवशेषों के कारण महत्वपूर्ण बने। सम्राट अशोक ने पूरे उपमहाद्वीप में अनेक स्तूप बनवाए।

प्रश्न 2. बौद्ध धर्म में संघ की क्या भूमिका थी?

उत्तर: संघ बुद्ध द्वारा स्थापित भिक्षुओं (भिक्खु) और भिक्षुणियों (भिक्खुनी) का समुदाय था। वे धम्म (सदाचारपूर्ण जीवन) के शिक्षक बने। संघ में सभी सामाजिक वर्गों के लोगों को समान रूप से स्वीकार किया जाता था। इसका संचालन चर्चा, सहमति और आवश्यकता पड़ने पर मतदान के माध्यम से लोकतांत्रिक ढंग से होता था।

प्रश्न 3. साँची सुरक्षित कैसे बच गया जबकि अमरावती नष्ट हो गया?

उत्तर: साँची इसलिए सुरक्षित बच गया क्योंकि समय रहते विद्वानों ने उसके मूल स्थान पर संरक्षण (In Situ Preservation) का महत्व समझ लिया। भोपाल की बेगमों ने भी इसके संरक्षण में सहायता की। दूसरी ओर, अमरावती की मूर्तियाँ यूरोपीय संग्रहालयों में भेजी जाती रहीं, जिससे उसका विनाश हो गया।

प्रश्न 4. बुद्ध की मुख्य शिक्षाएँ क्या थीं?

उत्तर: बुद्ध ने सिखाया कि संसार अनित्य (अनिच्च), आत्मारहित (अनत्ता) और दु:खमय (दुक्ख) है। उन्होंने कठोर तपस्या और भोग-विलास के बीच मध्यम मार्ग अपनाने का उपदेश दिया। उन्होंने करुणा (करुणा), मैत्री (मेत्ता) और व्यक्तिगत प्रयास पर बल दिया तथा समाज को मानव निर्मित बताया, जिसे बदला जा सकता है।

प्रश्न 5. महायान बौद्ध धर्म क्या है? यह पुरानी परंपरा से कैसे भिन्न था?

उत्तर: महायान बौद्ध धर्म पहली शताब्दी ईस्वी के आसपास विकसित हुआ। इसमें बुद्ध को एक उद्धारकर्ता के रूप में माना गया जो मोक्ष दिला सकते हैं। इसमें बोधिसत्त्व की अवधारणा भी विकसित हुई। इसके विपरीत, थेरवाद परंपरा बुद्ध को एक ऐसे मानव के रूप में देखती थी जिसने अपने प्रयासों से ज्ञान प्राप्त किया।

प्रश्न 6. भक्ति क्या है और वैष्णव तथा शैव धर्म में इसका विकास कैसे हुआ?

उत्तर: भक्ति का अर्थ है भक्त और उसके आराध्य देवता के बीच प्रेम और समर्पण का संबंध। वैष्णव धर्म में विष्णु के दस अवतारों की पूजा विकसित हुई, जबकि शैव धर्म में शिव की पूजा लिंग और मानव रूप दोनों में की जाती थी। भक्ति ने यज्ञों के बजाय व्यक्तिगत श्रद्धा पर बल दिया।

प्रश्न 7. महिलाएँ बौद्ध संघ में क्यों शामिल हुईं?

उत्तर: महिलाएँ आध्यात्मिक मुक्ति और सामाजिक समानता प्राप्त करने के लिए संघ में शामिल हुईं। ब्राह्मणवादी समाज में उनके लिए शिक्षा और आध्यात्मिक उन्नति के अवसर सीमित थे। संघ में वे भिक्षुणी बन सकती थीं, उच्च ज्ञान प्राप्त कर सकती थीं और धम्म की सम्मानित शिक्षिका (थेरी) बन सकती थीं।

प्रश्न 8. जैन धर्म के पाँच व्रत कौन-कौन से हैं?

उत्तर: जैन साधु-साध्वियाँ पाँच व्रतों का पालन करते हैं— (1) अहिंसा (हत्या न करना), (2) सत्य (झूठ न बोलना), (3) अस्तेय (चोरी न करना), (4) ब्रह्मचर्य (संयम), और (5) अपरिग्रह (संपत्ति का त्याग)। ये व्रत मोक्ष प्राप्ति के लिए आवश्यक माने जाते हैं।

प्रश्न 9. पुराण क्या थे और इन्हें किसके लिए लिखा गया था?

उत्तर: पुराण ब्राह्मणों द्वारा पहली सहस्राब्दी ईस्वी के मध्य में संकलित ग्रंथ थे। इनमें देवी-देवताओं की कथाएँ सरल संस्कृत में लिखी गई थीं ताकि महिलाएँ और शूद्र भी उन्हें सुन और समझ सकें। इन्होंने वैष्णव और शैव विचारधाराओं के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रश्न 10. साँची की प्रारंभिक बौद्ध मूर्तियाँ क्या दर्शाती हैं?

उत्तर: साँची की प्रारंभिक मूर्तियों में जातक कथाएँ, बुद्ध के प्रतीक (खाली सिंहासन, धर्मचक्र, बोधि वृक्ष, स्तूप), शालभंजिका जैसी लोकप्रिय आकृतियाँ, नाग पूजा और पशु दृश्यों का चित्रण मिलता है। इनमें बुद्ध को मानव रूप में नहीं दर्शाया गया है।

प्रश्न 11. गर्भगृह क्या है और मंदिर वास्तुकला का विकास कैसे हुआ?

उत्तर: गर्भगृह हिंदू मंदिर का सबसे पवित्र आंतरिक कक्ष होता है, जहाँ देवता की प्रतिमा स्थापित की जाती है। समय के साथ इसके ऊपर ऊँचा शिखर बनाया जाने लगा। बाद में सभा-मंडप, विशाल द्वार और जल-व्यवस्था जोड़ी गई। कुछ मंदिर, जैसे एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर, चट्टानों को काटकर बनाए गए।

प्रश्न 12. थेरीगाथा का महत्व क्या है?

उत्तर: थेरीगाथा बौद्ध साहित्य का एक अनूठा ग्रंथ है, जो भिक्षुणियों द्वारा रचित पद्यों का संग्रह है। यह महिलाओं के सामाजिक और आध्यात्मिक अनुभवों की जानकारी देता है। इसमें दासी महिला पुन्ना जैसी महिलाओं की रचनाएँ शामिल हैं, जो सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देती हैं।

प्रश्न 13. पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व के मध्य के भाग्यवादी और भौतिकवादी कौन थे?

OM SIKARWAR

उत्तर: आजीवक, जैसे मक्कलि गोसाल, भाग्यवादी थे। उनका मानना था कि सब कुछ पूर्वनिर्धारित है और कर्म या प्रयास से भाग्य नहीं बदला जा सकता। लोकायत या चार्वाक, जैसे अजित केशकंबली, भौतिकवादी थे। वे आत्मा, परलोक और यज्ञों के महत्व को नहीं मानते थे।

प्रश्न 14. विनय पिटक क्या है? इसके दो नियम बताइए।

उत्तर: विनय पिटक बौद्ध त्रिपिटक का एक भाग है, जिसमें संघ के सदस्यों के लिए नियम और अनुशासन दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, एक भिक्षु को नया कंबल लेने से पहले पुराने कंबल का कम से कम छह वर्ष उपयोग करना चाहिए। साथ ही, वह किसी परिवार से सीमित मात्रा में ही भोजन स्वीकार कर सकता है।

प्रश्न 15. स्तूपों का निर्माण और वित्तपोषण कैसे होता था?

उत्तर: स्तूपों के निर्माण के लिए राजाओं, व्यापारिक संघों, सामान्य स्त्री-पुरुषों, भिक्षुओं और भिक्षुणियों द्वारा दान दिया जाता था। साँची के एक प्रवेश द्वार का निर्माण हाथीदाँत कारीगरों के संघ ने कराया था। इससे स्पष्ट होता है कि स्तूप निर्माण सामुदायिक सहयोग का परिणाम था।

प्रश्न 16. सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक में क्या अंतर है?

उत्तर: सुत्त पिटक में बुद्ध की शिक्षाएँ, कथाएँ और उपदेश शामिल हैं, जो सामान्य लोगों की भाषा में प्रस्तुत किए गए हैं। अभिधम्म पिटक दार्शनिक और सैद्धांतिक विषयों पर केंद्रित है। दोनों त्रिपिटक के भाग हैं, जबकि विनय पिटक में संघ के नियम दिए गए हैं।

प्रश्न 17. पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व का मध्यकाल विश्व इतिहास में क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर: यह काल विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है। इसी समय ईरान में जरथुस्त्र, चीन में कन्फ्यूशियस, यूनान में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू तथा भारत में महावीर और बुद्ध जैसे महान चिंतक उभरे। साथ ही नए राज्यों, नगरों और आर्थिक परिवर्तनों का विकास हुआ।

प्रश्न 18. बौद्ध धर्म विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों को कैसे आकर्षित करता था?

उत्तर: बौद्ध धर्म उन लोगों को आकर्षित करता था जो पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं से असंतुष्ट थे। इसने मैत्री (मेत्ता) और करुणा (करुणा) जैसे मूल्यों पर बल दिया। बुद्ध ने समाज को मानव निर्मित माना और परिवर्तन योग्य बताया। संघ में सभी वर्गों के लोगों का स्वागत किया जाता था।

प्रश्न 19. कला इतिहास में 'पाठ और चित्र का मेल न होना' समस्या क्या है?

उत्तर: कला इतिहासकार मूर्तियों का अर्थ समझने के लिए ग्रंथों का सहारा लेते हैं, लेकिन दोनों हमेशा एक जैसी जानकारी नहीं देते। महाबलीपुरम की प्रसिद्ध शिलाकृति को कुछ विद्वान गंगा अवतरण मानते हैं, जबकि अन्य इसे अर्जुन की तपस्या बताते हैं। इसलिए एक ही चित्र की अनेक व्याख्याएँ संभव हैं।

प्रश्न 20. NCERT का 'स्मारक हिमखंड का केवल ऊपरी भाग हैं' से क्या आशय है?

उत्तर: NCERT का आशय है कि प्राचीन भारत की अधिकांश धार्मिक मान्यताएँ, अनुष्ठान और प्रथाएँ स्थायी स्मारकों या मूर्तियों में दर्ज नहीं हुईं। अनेक समुदायों ने स्थायी अभिलेख नहीं बनाए। इसलिए जो भव्य स्मारक आज दिखाई देते हैं, वे उस समृद्ध धार्मिक जीवन का केवल एक छोटा हिस्सा हैं।

SECTION E — लंबे प्रश्न और उत्तर [20 प्रश्न, प्रत्येक 150–300 शब्दों में]

OM SIKARWAR

निर्देश ये लंबे प्रश्न CBSE के 5-अंक / 8-अंक के उत्तरों और UPSC मेन्स GS-I के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। भाषा सरल, स्पष्ट और स्वाभाविक है — जैसे कोई शिक्षक छात्रों को समझा रहा हो। प्रत्येक उत्तर में परिचय, मुख्य बिंदु और निष्कर्ष की संरचना है।

Q1. Sanchi को ऐतिहासिक स्थल के रूप में महत्वपूर्ण बताइए। इसे संरक्षित करने का महत्व क्यों था? उत्तर
परिचय: Sanchi विश्व के सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध स्थलों में से एक है, जो मध्य प्रदेश में एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है, भोपाल से लगभग 20 मील उत्तर-पूर्व में।

ऐतिहासिक महत्व: इस स्थल में स्तूप, तोरण (द्वार) और मूर्तियां लगभग एक हजार वर्षों (तीसरी शताब्दी ई.पू. से 12वीं शताब्दी ई.) में बनाई गईं। रेलिंगों और स्तंभों पर शिलालेख सैकड़ों दानकर्ताओं — राजाओं से लेकर साधारण श्रमिकों तक — के नाम दर्ज करते हैं, जो प्रारंभिक भारतीय समाज की जीवंत तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। मूर्तियां जातक कथाओं, बुद्ध के प्रतीकों और लोक परंपराओं को दर्शाती हैं, जिससे Sanchi प्रारंभिक भारतीय धार्मिक और सामाजिक जीवन का दृश्य विश्वकोश बन जाता है।

संरक्षण का महत्व: 1818 में Sanchi की खोज ने प्रारंभिक बौद्ध धर्म की हमारी समझ को बदल दिया। जॉन मार्शल की Sanchi पर प्रकाशित पुस्तकें (1914 से आगे) भारतीय कला इतिहास की मील का पत्थर बनीं। भोपाल की सुल्तान जहां बेगम ने संग्रहालय, गेस्टहाउस (जहां मार्शल काम करते थे) और उनकी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए धन उपलब्ध कराया। इस बुद्धिमान संरक्षण के बिना Sanchi का भी अमरावती जैसा विनाश हो सकता था।

निष्कर्ष: Sanchi को 1989 में विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया, जो इसके उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य को मान्यता देता है। यह उन भारतीय और विदेशी व्यक्तियों की बुद्धिमत्ता का प्रमाण है जिन्होंने लूट के बजाय संरक्षण का मार्ग चुना।

Q2. पहली सहस्राब्दी ई.पू. के मध्य में भारत में दार्शनिक चिंतन की पृष्ठभूमि पर चर्चा कीजिए। कौन-से नए प्रश्न पूछे जा रहे थे? उत्तर परिचय: पहली सहस्राब्दी ई.पू. का मध्य विश्व इतिहास में उल्लेखनीय काल था। यूनान से चीन और भारत तक विभिन्न सभ्यताओं में महान विचारक उभरे जिन्होंने विश्व और मानवीय अस्तित्व के अर्थ को समझने का प्रयास किया।

यज्ञ परंपरा: भारत में यह काल वैदिक यज्ञ परंपरा के प्रभुत्व से शुरू हुआ। ऋग्वेद (लगभग 1500–1000 ई.पू.) में अग्नि, इंद्र और सोम जैसे देवताओं के मंत्र थे। शुरू में सामूहिक यज्ञ बाद में निजी अनुष्ठान बन गए। राजसूय और अश्वमेध जैसे विस्तृत यज्ञ ब्राह्मण पुरोहितों द्वारा राजाओं के लिए किए जाते थे।

नए प्रश्न: छठी शताब्दी ई.पू. तक उपनिषदों ने नए दार्शनिक प्रश्न उठाए: आत्मा का स्वरूप क्या है? परम सत्य (ब्रह्म) क्या है? पुनर्जन्म सत्य है? दुख का कारण क्या है? ज्ञान द्वारा मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है या केवल अनुष्ठान से?

अन्य स्वर: उसी समय अजीविक (नियतिवादी) और लोकायत (चार्वाक, भौतिकवादी) जैसे अन्य परंपराओं के शिक्षक पूरी तरह अलग उत्तर दे रहे थे। बौद्ध ग्रंथों में 64 मतों का उल्लेख है जो कुटोगरशालाओं में एक-दूसरे से बहस करते थे।

निष्कर्ष: इस बौद्धिक उथल-पुथल ने बौद्ध, जैन और हिंदू दार्शनिक परंपराओं जैसी विश्व की सबसे स्थायी परंपराओं को जन्म दिया।

(शेष उत्तरों का हिंदी अनुवाद नीचे जारी है। पूर्णता के लिए सभी 20 प्रश्नों का अनुवाद दिया गया है।)

OMSINGHAR

Q3. जैन धर्म की केंद्रीय शिक्षाओं का विस्तृत विवरण दीजिए।उत्तर परिचय: जैन धर्म भारत की सबसे प्राचीन दार्शनिक परंपराओं में से एक है।वर्धमान महावीर (छठी शताब्दी ई.पू.) को अक्सर इसका संस्थापक माना जाता है, पर जैन परंपरा के अनुसार उनसे पहले 23 अन्य तीर्थंकर हुए।

सजीव संसार: जैन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण विचार यह है कि पूरा विश्व सजीव है — पत्थर, चट्टान, जल, अग्नि और पृथ्वी में भी जीवन है।अतः किसी भी जीव को हानि पहुंचाना गलत है।अहिंसा जैन धर्म का सर्वोच्च सिद्धांत है।

कर्म और मोक्ष: जन्म-मृत्यु का चक्र कर्म द्वारा तय होता है।मोक्ष केवल संसार त्याग, कठोर तपस्या और संन्यास द्वारा संभव है।जैन धर्म में मोक्ष के लिए मठीय जीवन अनिवार्य है।

पांच महाव्रत: जैन भिक्षु-भिक्षुणियां पांच व्रत लेते हैं: (1) अहिंसा, (2) सत्य, (3) अस्तेय, (4) ब्रह्मचर्य, (5) अपरिग्रह।

ईश्वर की भूमिका नहीं: जैन धर्म सृष्टिकर्ता ईश्वर में विश्वास नहीं करता।मोक्ष केवल स्वयं के प्रयास से आता है।

निष्कर्ष: जैन धर्म की अहिंसा की अवधारणा ने पूरे भारतीय चिंतन पर गहरा प्रभाव डाला — आधुनिक काल में महात्मा गांधी तक।

Q4. बुद्ध के जीवन का वर्णन कीजिए और बताइए कि उन्होंने कैसे ज्ञान प्राप्त किया।उत्तर परिचय: बुद्ध — 'ज्ञान प्राप्त व्यक्ति' — विश्व के सबसे प्रभावशाली शिक्षकों में से एक हैं।उनका संदेश भारत से मध्य एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन, जापान और श्रीलंका तक फैला।

प्रारंभिक जीवन: सिद्धार्थ गौतम शाक्य गण के प्रमुख के पुत्र थे।वे महल में सुरक्षित जीवन जीते थे।एक दिन उन्होंने नगर देखा और बूढ़ा, बीमार तथा मृत व्यक्ति को देखा।

सत्य की खोज: वे महल छोड़कर सत्य की खोज में निकले।उन्होंने कठोर तपस्या की लेकिन मध्य मार्ग अपनाया।

ज्ञान प्राप्ति: एक वृक्ष के नीचे गहन ध्यान के बाद उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया।प्रथम उपदेश सारनाथ में दिया (धम्मचक्र प्रवर्तन)।

निष्कर्ष: बुद्ध ने चमत्कार के बजाय तर्क और करुणा से सिखाया।

Q6. महायान बौद्ध धर्म के विकास पर चर्चा कीजिए।यह पुरानी परंपरा से कैसे भिन्न था? उत्तर परिचय: पहली शताब्दी ई. तक बौद्ध विचारों और प्रथाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिससे महायान — अर्थात् 'महान वाहन' — नामक नया बौद्ध रूप उभरा।

पुरानी परंपरा: प्रारंभिक बौद्ध धर्म में बुद्ध को एक ऐसे मानव के रूप में देखा जाता था जिन्होंने स्वयं के प्रयास, अनुशासन और नैतिक जीवन से ज्ञान प्राप्त किया।निर्वाण (मुक्ति) व्यक्तिगत प्रयास का लक्ष्य था।इस पुरानी परंपरा को इसके अनुयायी थेरवाद (बुजुर्गों का मार्ग) कहते हैं।

महायान के नए विचार: महायान बौद्ध धर्म ने कई महत्वपूर्ण बदलाव किए:

1. बुद्ध उद्धारक के रूप में: नई सोच में बुद्ध को उद्धारक माना गया — केवल मानव शिक्षक नहीं, बल्कि वह भक्तों की मुक्ति सुनिश्चित कर सकते हैं।
2. बोधिसत्व: महायान में बोधिसत्व की अवधारणा विकसित हुई — अत्यंत करुणामय प्राणी जो पुण्य संचय करते हैं लेकिन स्वयं निर्वाण प्राप्त नहीं करते।वे संसार में रहकर दूसरों की मदद करते हैं।

OM SIKARWAR

3. बुद्ध की मूर्ति पूजा: बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियों की पूजा महायान परंपरा का महत्वपूर्ण अंग बन गई।

निष्कर्ष: महायान बौद्ध धर्म को बहुत व्यापक दर्शकों तक पहुंच योग्य बनाया। करुणामय उद्धारक और बोधिसत्व आदर्श ने साधारण लोगों को यह विश्वास दिलाया कि उन्हें दिव्य सहायता उपलब्ध है।

Q7. पुराणिक हिंदू धर्म के विकास और वैष्णववाद तथा शैववाद के विकास का वर्णन कीजिए। उत्तर परिचय: व्यक्तिगत उद्धारक ईश्वर की अवधारणा केवल बौद्ध धर्म तक सीमित नहीं थी। हिंदू परंपराओं — विशेष रूप से वैष्णववाद और शैववाद — में भी इसी प्रकार के विचार विकसित हुए।

वैष्णववाद: वैष्णववाद वह परंपरा है जिसमें विष्णु मुख्य देवता के रूप में पूजे जाते हैं। विष्णु के विभिन्न अवतारों के इर्द-गिर्द संप्रदाय विकसित हुए। दस अवतार मान्य थे — जब भी संसार में अराजकता और बुराई बढ़ती, विष्णु रूप धारण कर बचाते थे। विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग अवतार लोकप्रिय थे। स्थानीय देवताओं को विष्णु का रूप मानकर धार्मिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया गया। उदाहरणस्वरूप, वासुदेव-कृष्ण की पूजा पहले मथुरा क्षेत्र में शुरू हुई और धीरे-धीरे पूरे देश में फैली।

शैववाद: शैववाद में शिव मुख्य देवता हैं। शिव मुख्यतः लिंग के रूप में पूजे जाते थे, हालांकि मानव रूप में भी उनकी मूर्तियां बनाई जाती थीं।

पुराणों की भूमिका: पहली सहस्राब्दी ई. के मध्य में ब्राह्मणों द्वारा संकलित पुराण इन परंपराओं को फैलाने का महत्वपूर्ण माध्यम बने। सरल संस्कृत छंदों में लिखे ये ग्रंथ महिलाओं और शूद्रों सहित सभी को पढ़कर सुनाए जाते थे। पुराणों का विकास पुजारी, व्यापारी और साधारण लोगों के बीच यात्राओं और कथाओं के आदान-प्रदान से हुआ।

भक्ति: वैष्णववाद और शैववाद दोनों में भक्ति — भक्त और ईश्वर के बीच प्रेम और समर्पण — केंद्रीय था। यह भावनात्मक संबंध अनुष्ठानिक यज्ञ से अधिक महत्वपूर्ण माना गया।

निष्कर्ष: वैष्णववाद, शैववाद और पुराणिक परंपरा ने आज के लोकप्रिय हिंदू धर्म की नींव रखी। सरल साहित्य के माध्यम से सभी वर्गों तक पहुंचना भारतीय धर्म के इतिहास में उल्लेखनीय विकास था।

Q8. भोपाल की बेगमों द्वारा Sanchi के स्तूप के संरक्षण में निभाई गई भूमिका की व्याख्या कीजिए। उत्तर परिचय: Sanchi के संरक्षण की कहानी भोपाल रियासत के शासकों — विशेष रूप से शाहजहां बेगम और सुल्तान जहां बेगम — की उदारता और बुद्धिमत्ता से अटूट रूप से जुड़ी है।

Sanchi पर खतरा: 1818 में जब यूरोपीयों ने Sanchi की 'खोज' की, तब इसके चार तोरणों में से तीन खड़े थे। 19वीं शताब्दी के यूरोपीय विद्वान इस खोज से अत्यंत उत्साहित थे। फ्रांसीसी और अंग्रेज दोनों ने शाहजहां बेगम से अनुमति मांगी कि पूर्वी तोरण (सबसे अच्छी हालत वाला) को फ्रांस और लंदन के संग्रहालयों में ले जाया जाए। कुछ समय तक लगा कि Sanchi का भी अमरावती जैसा विनाश हो जाएगा।

बेगमों का निर्णय: सौभाग्य से, फ्रांसीसी और अंग्रेज प्लास्टर-कास्ट प्रतियों से संतुष्ट हो गए। मूल तोरण स्थल पर ही रहा, जो शाहजहां बेगम के बुद्धिमान निर्णय का परिणाम था।

सक्रिय संरक्षण: शाहजहां बेगम और उनकी उत्तराधिकारी सुल्तान जहां बेगम ने केवल तोरणों को बचाने तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने पूरे प्राचीन स्थल के संरक्षण के लिए धन उपलब्ध कराया। सुल्तान जहां बेगम ने वित्त पोषित किया — Sanchi में संग्रहालय का निर्माण, वह गेस्टहाउस जहां जॉन मार्शल रहकर काम करते थे, और मार्शल की महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन। जॉन मार्शल ने अपनी Sanchi संबंधी पुस्तकों को सुल्तान जहां बेगम को समर्पित किया।

अमरावती से तुलना: अमरावती का स्तूप धीरे-धीरे नष्ट हो गया क्योंकि यूरोपीय अधिकारियों ने मूर्तियां टुकड़े-टुकड़े करके ले लीं। बेगमों के संरक्षण के बिना Sanchi की भी यही दशा होती।

निष्कर्ष: Sanchi का विश्व धरोहर स्थल (1989) के रूप में अस्तित्व भोपाल की बेगमों की बुद्धिमत्ता और उदारता का परिणाम है। लूट के बजाय संरक्षण का उनका निर्णय इस बौद्ध वास्तुकला के रत्न को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रख गया।

Q8. Explain the role played by the begums of Bhopal in preserving the stupa at Sanchi. उत्तर परिचय: Sanchi के संरक्षण की कहानी भोपाल रियासत के शासकों — विशेष रूप से शाहजहां बेगम और सुल्तान जहां बेगम — की उदारता और बुद्धिमत्ता से अटूट रूप से जुड़ी है।

Sanchi पर खतरा: 1818 में जब यूरोपीयों ने Sanchi की 'खोज' की, तब इसके चार तोरणों में से तीन खड़े थे। 19वीं शताब्दी के यूरोपीय विद्वान इस खोज से अत्यंत उत्साहित थे। वास्तव में, फ्रांसीसी और अंग्रेज दोनों ने शाहजहां बेगम से अनुमति मांगी कि पूर्वी तोरण — सबसे अच्छी तरह संरक्षित — को फ्रांस और लंदन के संग्रहालयों में प्रदर्शित करने के लिए ले जाया जाए। कुछ समय के लिए ऐसा लग रहा था कि Sanchi का भी अमरावती जैसा भाग्य हो जाएगा।

बेगमों का निर्णय: सौभाग्य से, फ्रांसीसी और अंग्रेज दोनों सावधानीपूर्वक तैयार की गई प्लास्टर-कास्ट प्रतियों से संतुष्ट हो गए। मूल तोरण स्थल पर ही रह गया, जो शाहजहां बेगम के बुद्धिमान निर्णय का परिणाम था।

सक्रिय संरक्षण: शाहजहां बेगम और उनकी उत्तराधिकारी सुल्तान जहां बेगम ने केवल तोरणों को हटने से रोकने तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने पूरे प्राचीन स्थल के संरक्षण के लिए सक्रिय रूप से धन उपलब्ध कराया। सुल्तान जहां बेगम ने निधि प्रदान की: - Sanchi में बनाए गए संग्रहालय के लिए। - उस गेस्टहाउस के लिए जहां महान पुरातत्वविद् जॉन मार्शल रहते थे और अपनी महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखते थे। - मार्शल की Sanchi पर लैंडमार्क कार्य के प्रकाशन के लिए।

जॉन मार्शल ने Sanchi पर अपनी महत्वपूर्ण पुस्तकों को सुल्तान जहां बेगम को समर्पित किया, उनकी महत्वपूर्ण सहायता को स्वीकार करते हुए।

अमरावती से विरोधाभास: अमरावती का भाग्य — जहां क्रमिक औपनिवेशिक अधिकारियों ने मूर्तियों को टुकड़े-टुकड़े करके ले लिया जब तक स्तूप एक नगण्य टीले में कम नहीं हो गया — यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि बेगमों के संरक्षण के बिना Sanchi के साथ क्या हो सकता था।

निष्कर्ष: Sanchi का विश्व धरोहर स्थल (1989 में नामित) के रूप में अस्तित्व भोपाल की बेगमों की बुद्धिमत्ता और उदारता का बहुत बड़ा ऋणी है, जिनके संरक्षण का निर्णय लूट की बजाय चुनने से इस बौद्ध वास्तुकला के रत्न को भावी पीढ़ियों के लिए बनाए रखा गया।

Q9. How did early Buddhist sculptors represent the Buddha? Discuss the use of symbols in Buddhist art. उत्तर परिचय: प्रारंभिक बौद्ध मूर्तिकला — विशेष रूप से Sanchi में — की सबसे आकर्षक विशेषताओं में से एक यह है कि बुद्ध को मानव रूप में नहीं दर्शाया गया। इसके बजाय मूर्तिकारों ने बुद्ध के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रतीकों की एक प्रणाली का उपयोग किया।

प्रतीकों का उपयोग क्यों? इतिहासकार सुझाव देते हैं कि प्रारंभिक मूर्तिकारों को लगा कि बुद्ध की महानता को मानव रूप में पर्याप्त रूप से नहीं व्यक्त किया जा सकता। उनकी उपस्थिति को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाकर वे दर्शक को प्रतिनिधित्व की जा रही घटनाओं के महत्व पर चिंतन करने के लिए आमंत्रित करते थे।

मुख्य प्रतीक:

1. खाली सिंहासन: बुद्ध के ध्यान को दर्शाता है — गहन चिंतन का क्षण जो ज्ञान प्राप्ति की ओर ले गया। खाली सिंहासन दर्शकों को याद दिलाता है कि बुद्ध उपस्थित थे, लेकिन साधारण धारणा से परे।
2. बोधि वृक्ष: ज्ञान प्राप्ति को दर्शाता है। वृक्ष केवल वृक्ष के लिए नहीं खड़ा है — यह बुद्ध के जीवन की उस घटना का प्रतीक है जब उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया। इतिहासकारों को इसे समझने के लिए बौद्ध ग्रंथों से परिचित होना पड़ा।
3. चक्र (धर्मचक्र): बुद्ध के सारनाथ में प्रथम उपदेश को दर्शाता है — 'धम्म के चक्र को गति में लाना'।
4. स्तूप: महापरिनिर्वाण — बुद्ध की मृत्यु और अंतिम मुक्ति — को दर्शाता है।
5. पदचिह्न: बुद्ध की उपस्थिति को दर्शाते हैं — संसार में उनका मार्ग।

इतिहासकारों के लिए चुनौती: कला इतिहासकारों को इन प्रतीकों को समझने के लिए बौद्ध साहित्यिक परंपराओं से परिचित होना पड़ा। उदाहरण के लिए, एक मूर्ति जो पहली नजर में वृक्ष दिखाती थी वास्तव में ज्ञान प्राप्ति का प्रतीक थी — लेकिन केवल उन लोगों के लिए जो बुद्ध की जीवनियों से परिचित थे।

मानव रूप का परिचय: बाद में, महायान बौद्ध धर्म के विकास और उत्तर-पश्चिम (टैक्सिला, पेशावर) में यूनानी कलात्मक परंपराओं के प्रभाव से, बुद्ध को मानव रूप में दर्शाया जाने लगा। गंधार का बोधिसत्व एक प्रसिद्ध उदाहरण है — यूनानी मूर्तिकला से प्रभावित वस्त्र और केश शैली वाला।

निष्कर्ष: प्रारंभिक बौद्ध कला में उपयोग की गई प्रतीकों की प्रणाली धार्मिक और कलात्मक परंपराओं के कैसे अंतर्क्रिया करते हैं इसका एक शक्तिशाली उदाहरण है। इन प्रतीकों को समझने के लिए कला इतिहास और बौद्ध साहित्य दोनों का ज्ञान आवश्यक है — जो दर्शाता है कि पाठ्य और छवि को हमेशा साथ पढ़ना चाहिए।

Q10. Discuss the development of temple architecture in early India, from the earliest garbhagriha to the Kailashnatha Temple at Ellora. उत्तर परिचय: हिंदू मंदिर वास्तुकला कई शताब्दियों में धीरे-धीरे विकसित हुई, सरल मंदिरों से विश्व की सबसे भव्य पत्थर की संरचनाओं में से कुछ तक।

प्रथम मंदिर: सांची के स्तूपों के वर्तमान रूप प्राप्त करने के आसपास (लगभग दूसरी शताब्दी ई.पू. से आगे), प्रथम हिंदू मंदिर भी बनाए जा रहे थे। प्रारंभिक मंदिर सरल संरचनाएं थे। आवश्यक विशेषता थी गर्भगृह — एक छोटा वर्गाकार कमरा जिसमें एकल द्वार था जिससे भक्त प्रवेश कर देवता की मूर्ति की पूजा कर सकता था। गर्भगृह का शाब्दिक अर्थ 'गर्भ कक्ष' है।

शिखर: धीरे-धीरे, केंद्रीय मंदिर के ऊपर शिखर नामक ऊंची संरचना बनाई जाने लगी। शिखर उत्तरी भारतीय मंदिर वास्तुकला की परिभाषित विशेषता बन गया। देवगढ़, उत्तर प्रदेश (लगभग 5वीं शताब्दी ई.) का मंदिर इसका प्रारंभिक सुंदर उदाहरण है, जिसमें गर्भगृह के ऊपर प्रारंभिक शिखर है। मंदिर की दीवारें मूर्तिकला से सजी थीं — जैसे देवगढ़ से विष्णु का शेषनाग पर लेटा हुआ भव्य चित्रण।

बाद के विस्तार: बाद के मंदिर बहुत अधिक विस्तृत हो गए, जिनमें शामिल थे: - मंडप (सभा कक्ष) बड़े समारोहों के लिए। - विशाल दीवारें और द्वार (दक्षिण भारत में गोपुरम)। - मंदिर परिसर में जल आपूर्ति की व्यवस्था।

कृत्रिम गुफाएं: प्रारंभिक भारतीय धार्मिक वास्तुकला की एक अनोखी विशेषता विशाल शिलाओं को खोखला करके कृत्रिम गुफाएं बनाने की परंपरा थी। सबसे प्रारंभिक बिहार में बराबर गुफाएं (तीसरी शताब्दी ई.पू.) थीं, जो अशोक के आदेश पर अजीविक संप्रदाय के लिए बनाई गईं। यह परंपरा जारी रही और अजंता के बौद्ध गुफा परिसरों तथा महाबलीपुरम के ब्राह्मणिकल गुफाओं के साथ भव्य ऊंचाइयों तक पहुंची।

एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर: परंपरा 8वीं शताब्दी ई. में एलोरा (महाराष्ट्र) के कैलाशनाथ मंदिर को तराशने के साथ चरम पर पहुंची — शिव को समर्पित (कैलाशनाथ = शिव का एक नाम)। पूरा मंदिर एक ही शिला के टुकड़े से तराशा गया था। एक तांबे की पट्टिका शिलालेख मुख्य मूर्तिकार के आश्चर्य को दर्ज करती है जब उन्होंने मंदिर पूरा किया: 'ओह मैंने इसे कैसे बनाया!'

निष्कर्ष: हिंदू मंदिर वास्तुकला का लगभग एक हजार वर्षों में विकास — सरल गर्भगृह से कैलाशनाथ मंदिर तक — मानवीय रचनात्मकता की महान उपलब्धियों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। प्रत्येक चरण ने दिव्य की प्रकृति और भक्त तथा देवता के बीच संबंध के बारे में गहरे धार्मिक विचारों को प्रतिबिंबित किया।

Q11. What were the Jataka tales? How were they depicted in the sculpture at Sanchi? उत्तर परिचय: जातक कथाएं बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियां हैं — सैकड़ों जन्म जिन्हें उन्होंने अपनी अंतिम जन्म सिद्धार्थ गौतम के रूप में लेने से पहले लिए, जिनमें उन्होंने धीरे-धीरे वह पुण्य और ज्ञान संचित किया जो उनकी ज्ञान प्राप्ति की ओर ले गया।

जातक कथाएं: ये कहानियां मूल रूप से मौखिक आख्यान थीं, बाद में जातकमाला नामक लिखित ग्रंथ में संकलित की गईं। वे अत्यधिक लोकप्रिय थीं क्योंकि वे साधारण लोगों की भाषा में बताई जाती थीं और उदारता, करुणा, न्याय और बुद्धिमत्ता जैसे विषयों से संबंधित थीं। जातक कथाओं के नायक — चाहे राजा हों, पशु हों, या साधारण लोग — हमेशा बौद्ध धर्म द्वारा मूल्यवान गुणों का प्रदर्शन करते हैं।

Sanchi में: Sanchi की मूर्तिकला कई जातक कहानियों को दर्शाती है। एक प्रसिद्ध उदाहरण चित्र 4.13 है — एक दृश्य जो पहली नजर में ग्रामीण परिदृश्य दिखाता है जिसमें छप्पर वाले झोपड़े, वृक्ष और गांव की गतिविधियां हैं। हालांकि, कला इतिहासकारों ने छवि का सावधानीपूर्वक अध्ययन करके — और इसे बौद्ध ग्रंथ परंपराओं से तुलना करके — इसे वेस्संतर जातक के रूप में पहचाना।

वेस्संतर जातक: यह उदार राजकुमार वेस्संतर की कहानी है जिन्होंने सब कुछ — अपने राज्य सहित — एक ब्राह्मण को दान कर दिया, और फिर अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जंगल में रहने चले गए। कहानी चरम उदारता को सर्वोच्च गुण के रूप में मनाती है।

इतिहासकारों के लिए चुनौती: बौद्ध साहित्य के ज्ञान के बिना, मूर्तिकला एक सुखद ग्रामीण दृश्य प्रतीत होती, उसकी कथात्मक अर्थ पूरी तरह खो जाती। यह उदाहरण दर्शाता है कि कला इतिहासकारों को हमेशा छवि के साथ पाठ्य पढ़ना क्यों चाहिए।

जातक कला में पशु: कई जातक कथाएं पशुओं से संबंधित हैं — बुद्ध हाथी, हिरण, बंदर और विभिन्न अन्य प्राणियों के रूप में पुनर्जन्म लेते हैं। Sanchi में पशुओं के कुछ सबसे सुंदर चित्रण मिलते हैं: हाथी, घोड़े, बंदर और मवेशी। जबकि जातक कथाओं में पशु कहानियां हैं, यह संभावना है कि इनमें से कई पशु नक्काशियां मुख्य रूप से दर्शकों के लिए जीवंत और आकर्षक दृश्य बनाने के लिए बनाई गई थीं।

निष्कर्ष: जातक कथाएं इस प्रकार साहित्यिक परंपरा और दृश्य परंपरा दोनों थीं। Sanchi में, उन्होंने स्तूप को बुद्ध की ज्ञान प्राप्ति की यात्रा की तीन-आयामी चित्र पुस्तक में बदल दिया — सभी आगंतुकों के लिए सुलभ, साक्षर हों या नहीं।

Q12. Discuss the teachings of the Buddha as found in the Sutta Pitaka. What made Buddhism attractive to people of different backgrounds? उत्तर परिचय: बुद्ध की शिक्षाओं का पुनर्निर्माण मुख्य रूप से सुत्त पिटक में पाए गए कहानियों से किया गया है — बौद्ध साहित्य की तीन टोकरियों (तिपिटक) में से एक। जबकि कुछ कहानियां बुद्ध की चमत्कारिक शक्तियों का वर्णन करती हैं, अन्य सुझाव देते हैं कि उन्होंने तर्क और सौम्य समझाने से सिखाया।

मुख्य शिक्षाएं:

1. अनिच्च (क्षणभंगुरता): संसार क्षणभंगुर है और लगातार बदल रहा है। संसार में कुछ भी स्थायी नहीं है।
2. अनत्ता (अनात्मवाद): संसार में कुछ भी स्थायी या शाश्वत नहीं है — यहां तक कि आत्मा भी नहीं। यह ब्राह्मणिक और उपनिषदीय आत्मा (व्यक्तिगत आत्मा) की अवधारणा से radical विचलन था।
3. दुख (दुख): दुख मानवीय अस्तित्व का अंतर्निहित है। कठोर तपस्या और आत्म-भोग के बीच मध्य मार्ग का अनुसरण करके मानव संसारिक कठिनाइयों से ऊपर उठ सकते हैं।
4. व्यक्तिगत एजेंसी: बुद्ध ने जोर दिया कि मानव स्वयं को और अपने सामाजिक संसार को अपने प्रयासों से बदल सकते हैं।
5. सामाजिक नैतिकता: जैसा कि सुत्त पिटक दर्ज करता है, बुद्ध ने सामाजिक संबंधों पर व्यावहारिक सलाह दी — एक धनी गृहस्थ सिगाल को सलाह दी कि वह अपने सेवकों के साथ दयालुता से व्यवहार करे, उन्हें भोजन और मजदूरी प्रदान करे, बीमारी में उनकी देखभाल करे, और स्वादिष्ट भोजन साझा करे।

बौद्ध धर्म क्यों आकर्षक था: बौद्ध धर्म तेजी से बढ़ा क्योंकि यह कई अलग-अलग समूहों को आकर्षित करता था: - ब्राह्मणिक अनुष्ठान और जन्म-आधारित पदानुक्रम पर असंतुष्ट लोग। - काल के तेज सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों से भ्रमित लोग। - श्रमिक, शिल्पकार और दास — क्योंकि संघ उन्हें समान रूप से स्वीकार करता था। - महिलाएं — क्योंकि वे संघ में शामिल हो सकती थीं और आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त कर सकती थीं। - धनी — क्योंकि मेट्टा (सहानुभूति) और करुणा (दया) के मूल्य उन्हें अपने व्यवहार के लिए नैतिक ढांचा देते थे।

निष्कर्ष: बुद्ध की शिक्षाओं की प्रतिभा उसकी दार्शनिक गहराई और व्यावहारिक सरलता का संयोजन था। यह सभी के लिए सुलभ मुक्ति का मार्ग प्रदान करता था — जन्म, लिंग या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना।

Q13. Describe what a kutogarashala was and explain the intellectual debates that took place in the mid-first millennium BCE in India. उत्तर परिचय: पहली सहस्राब्दी ई.पू. का मध्य भारत में असाधारण बौद्धिक गतिविधि का काल था। ब्राह्मणिक, बौद्ध, जैन, भौतिकवादी और नियतिवादी कई परंपराओं के शिक्षक एक-दूसरे से जोरदार बहस करते थे।

कुटोगरशाला: बौद्ध ग्रंथ एक प्रकार की नुकीली छत वाली झोपड़ी (कुटोगरशाला) का वर्णन करते हैं जहां यात्रा करने वाले साधु ठहरते थे। ये झोपड़ियां अक्सर कस्बों और शहरों के पास के उपवनों में पाई जाती थीं, और वे अनौपचारिक बहस के अखाड़े के रूप में काम करती थीं। विभिन्न परंपराओं के शिक्षक वहां रुकते, अपनी विचारों पर चर्चा करते और एक-दूसरे तथा मौजूद किसी भी साधारण लोगों को अपनी दार्शनिक स्थिति की वैधता के बारे में समझाने का प्रयास करते। बौद्ध ग्रंथों में 64 संप्रदायों या विचार धाराओं का उल्लेख है।

मुख्य दार्शनिक बहसें:

1. यज्ञ परंपरा बनाम नए विचारक: पुरानी ब्राह्मणिक परंपरा मानती थी कि ब्राह्मण पुरोहितों द्वारा उचित यज्ञ (यज्ञ) का प्रदर्शन कल्याण और समृद्धि के लिए आवश्यक था। उपनिषदीय विचारकों ने पूछा कि क्या अनुष्ठान पर्याप्त थे और उन्होंने आत्म (आत्मा) और परम वास्तविकता (ब्रह्म) पर दार्शनिक चिंतन की ओर रुख किया।
2. नियतिवादी बनाम अन्य: अजीविक (मक्खलि गोसाल के नेतृत्व में) का तर्क था कि सब कुछ पूर्वनिर्धारित है — न कर्म और न प्रयास किसी व्यक्ति के भाग्य को बदल सकता है। यह गहराई से विवादास्पद था। अगर सब कुछ तय है तो नैतिक जीवन की वकालत कैसे की जा सकती है?

3. भौतिकवादी बनाम अन्य: लोकायत (अजित केशकंबली जैसे) आत्मा, कर्म, पुनर्जन्म और सदाचरण के किसी भी गुण के अस्तित्व से इनकार करते थे। उनके लिए मानव केवल चार तत्वों का संयोजन थे जो मृत्यु पर विघटित हो जाते थे।
4. बौद्ध और जैन: महावीर और बुद्ध दोनों ने वेदों की प्रामाणिकता और जन्म द्वारा व्यक्ति की आध्यात्मिक क्षमता तय होने के विचार को अस्वीकार किया। उन्होंने जोर दिया कि मुक्ति किसी भी व्यक्ति को अपने नैतिक प्रयास से उपलब्ध थी।

दांव: इन बहसों में दांव ऊंचा था। अगर एक दार्शनिक अपने प्रतिद्वंद्वियों को समझा लेता तो उनके अनुयायी allegiance बदल सकते थे। किसी विशेष संप्रदाय के लिए समर्थन तर्कों की गुणवत्ता पर बढ़ या घट सकता था।

निष्कर्ष: बहस का यह काल विश्व इतिहास में सबसे स्थायी दार्शनिक प्रणालियों में से कुछ को जन्म दिया। विभिन्न परंपराओं के बीच संवाद ने प्रत्येक को समृद्ध किया और भारतीय दार्शनिक विचार की उल्लेखनीय विविधता में योगदान दिया।

Q14. Who were the Bodhisattas and what role did they play in Mahayana Buddhism? उत्तर परिचय: बोधिसत्व की अवधारणा बौद्ध विचार की सभी सबसे महत्वपूर्ण और हृदयस्पर्शी विचारों में से एक है। यह पहली शताब्दी ई. के आसपास महायान बौद्ध धर्म में उभरी और धर्म की प्रकृति और आकर्षण को बदल दिया।

बोधिसत्व क्या है? शब्द 'बोधिसत्व' (संस्कृत: बोधिसत्त्व) का अर्थ 'जिसकी सार्वभौमिकता जागृति है' है। बोधिसत्व एक गहराई से करुणामय प्राणी है जिसने कई जन्मों में सदाचारी कार्यों से विशाल पुण्य संचित किया है। हालांकि, साधारण भिक्षु के विपरीत जो निर्वाण प्राप्त करता है और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त होता है, बोधिसत्व जानबूझकर स्वयं के लिए अंतिम निर्वाण प्राप्त नहीं करता। इसके बजाय, बोधिसत्व संसार में रहता है — या उसमें लौटता है — ताकि अन्य सभी संवेदनशील प्राणियों को मुक्ति प्राप्त करने में मदद कर सके।

यह क्रांतिकारी विचार क्यों था: पुरानी परंपरा (थेरवाद) में मुक्ति मुख्य रूप से व्यक्तिगत लक्ष्य के रूप में देखी जाती थी — कुछ ऐसा जिसे प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रयास से प्राप्त करना था। बोधिसत्व विचार ने गहराई से सामाजिक और परोपकारी आयाम पेश किया: सबसे बड़ी आध्यात्मिक उपलब्धि अपनी मुक्ति नहीं, बल्कि सभी प्राणियों की मुक्ति के प्रति समर्पण है।

बुद्ध एक बोधिसत्व के रूप में: महायान ग्रंथों में, बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियां (जातक कथाएं) उनकी लंबी बोधिसत्व करियर की कहानी के रूप में पुनर्व्याख्या की गई — अंतिम जन्म सिद्धार्थ गौतम के रूप में लेने से पहले उदारता, करुणा और बुद्धिमत्ता के असंख्य कार्यों से पुण्य संचित करना।

कला में बोधिसत्व: बोधिसत्वों को मूर्तिकला और चित्रकला में दर्शाया गया। सबसे प्रसिद्ध मूर्तिकला परंपरा गंधार (उत्तर-पश्चिम भारत और पाकिस्तान) की थी, जहां बोधिसत्वों को समृद्ध वस्त्रों और आभूषणों में दिखाया गया — अभी भी संसार में, अभी तक इससे अलग नहीं — स्पष्ट रूप से यूनानी कलात्मक प्रभाव के साथ।

लोकप्रिय आकर्षण: बोधिसत्व का विचार महायान बौद्ध धर्म को अत्यधिक लोकप्रिय बनाता था। साधारण विश्वासी बोधिसत्वों से मदद के लिए प्रार्थना कर सकते थे। बोधिसत्व की करुणा सभी के लिए उपलब्ध थी — अमीर और गरीब, विद्वान और निरक्षर।

निष्कर्ष: बोधिसत्व आदर्श बौद्ध परंपरा में सबसे शक्तिशाली और स्थायी विचारों में से एक बना हुआ है। इसने बौद्ध धर्म को समर्पित भिक्षुओं के मार्ग से करुणा के सार्वभौमिक धर्म में बदल दिया।

Q15. Discuss the inscription of Dhanavati and what it tells us about women's participation in Buddhist life. उत्तर परिचय: बौद्ध धर्म के सामाजिक इतिहास को समझने के लिए सबसे मूल्यवान स्रोतों में से एक कुशाण काल की भिक्षुणी धनवती का शिलालेख है।

शिलालेख: शिलालेख पढ़ता है: 'महाराज हुविष्क (एक कुशाण शासक) के वर्ष 33 में, ग्रीष्म ऋतु के पहले महीने में आठवें दिन, मधुवन में एक बोधिसत्व भिक्खुनी धनवती द्वारा स्थापित किया गया, जो भिक्खुनी बुद्धमिता की बहन की बेटी है, जो त्रिपिटक जानती है, भिक्षु बाला की शिष्या है, जो त्रिपिटक जानती है, अपने पिता और माता के साथ'।

यह शिलालेख हमें क्या बताता है:

1. महिलाएं संरक्षक के रूप में: धनवती ने एक बोधिसत्व छवि स्थापित की — वह बौद्ध कला की सक्रिय संरक्षक थी। यह दर्शाता है कि महिलाएं केवल निष्क्रिय अनुयायी नहीं थीं बल्कि धार्मिक जीवन में सक्रिय भागीदार थीं, पुण्य और भक्ति के कार्य के रूप में धार्मिक छवियां commissioning कर रही थीं।
2. महिलाओं की शिक्षा: धनवती को त्रिपिटक जानने वाली बताया गया है — बौद्ध साहित्य का पूरा कैनन। उनकी मौसी भिक्खुनी बुद्धमिता भी। यह उल्लेखनीय है: एक ही परिवार की दो महिलाओं ने बौद्ध विद्या के सबसे उन्नत स्तर में महारत हासिल की थी। बौद्ध धर्म में महिलाओं को प्राचीन संसार में असामान्य स्तर की शिक्षा उपलब्ध थी।
3. लिंग-आड़े सीखना: धनवती ने त्रिपिटक एक पुरुष भिक्षु — भिक्षु बाला — से सीखा। यह दर्शाता है कि बौद्ध धर्म में, सीखना लिंग रेखाओं के पार प्रसारित होता था। एक महिला पुरुष शिक्षक की शिष्या हो सकती थी, और समान महारत प्राप्त कर सकती थी।
4. पारिवारिक नेटवर्क: शिलालेख धनवती के परिवार का उल्लेख करता है — उनकी मौसी, उनके शिक्षक, उनके पिता और माता। यह सुझाव देता है कि बौद्ध भागीदारी अक्सर पारिवारिक परंपरा थी, जिसमें ज्ञान और भक्ति परिवारों के भीतर प्रसारित होती थी।
5. राजकीय वर्ष द्वारा डेटिंग: धनवती शिलालेख को कुशाण शासक हुविष्क के राजकीय वर्ष द्वारा डेट करती है — प्राचीन भारत में मानक प्रथा, जो बौद्ध समुदाय और राजकीय कालक्रम के बीच संबंध दर्शाती है।

निष्कर्ष: धनवती का शिलालेख एक छोटा दस्तावेज है जिसमें बड़े निहितार्थ हैं। यह हमें बताता है कि बौद्ध धर्म में महिलाएं शिक्षित, स्वतंत्र, आर्थिक रूप से सक्रिय (धार्मिक छवियां commissioning करने में सक्षम) और आध्यात्मिक रूप से पूर्ण हो सकती थीं। यह कई प्रमाणों में से एक है जो सुझाव देता है कि बौद्ध धर्म — सिद्धांत में और अक्सर व्यवहार में — प्राचीन संसार की कई अन्य धार्मिक परंपराओं की तुलना में कहीं अधिक समतावादी था।

Q16. Explain the significance of the Therigatha as a historical source. What does it tell us about women in early Buddhism? उत्तर परिचय: थेरिगाथा ('बुजुर्ग ननों के छंद') एक अनोखा और मूल्यवान ग्रंथ है — सुत्त पिटक का भाग — जिसमें भिक्षुणियों (महिला भिक्षुओं) द्वारा रचित छंद शामिल हैं। यह विश्व साहित्य में महिलाओं के लेखन का सबसे प्रारंभिक संग्रहों में से एक है, और प्रारंभिक बौद्ध धर्म में महिलाओं के सामाजिक और आध्यात्मिक अनुभवों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है।

पुन्ना की कहानी: थेरिगाथा में सबसे उल्लेखनीय रचनाओं में से एक पुन्ना द्वारा है, एक दासी (दास महिला) जो हर सुबह अपने स्वामी के घर के लिए नदी से पानी लाने जाती थी। वहां वह नियमित रूप से एक ब्राह्मण को स्नान अनुष्ठान करते देखती थी। एक सुबह उसने उसे चुनौती दी: 'मैं पानी ढोने वाली हूं, ठंड में भी... तुम्हें

ब्राह्मणों से क्या डर है, और पानी में उतरते हो? अगर पानी में धोने से तुम बुराई से मुक्त हो जाते हो, तो सभी मेंढक, कछुए, जल-सांप और मगरमच्छ स्वर्ग जाएंगे!'

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि अच्छे कार्य बुराई को रोकते हैं। पुन्ना ने फिर आगे चुनौती दी: 'अगर अच्छे कार्य बुराई को रोकते हैं, तो तुम ठंडी नदी में क्यों धोते हो?'

इस कहानी का महत्व:

1. सामाजिक क्रांतिकारिता: एक दासी — सबसे निचली सामाजिक श्रेणी — में आत्मविश्वास और दार्शनिक ज्ञान है कि वह एक ब्राह्मण की धार्मिक प्रथा को चुनौती दे। यह असाधारण है। यह दर्शाता है कि बौद्ध धर्म ने सबसे हाशिए पर पड़ी महिलाओं को भी आवाज और शिक्षा दी।
2. महिलाओं की आध्यात्मिक समानता: थेरिगाथा समग्र रूप से दर्शाती है कि महिलाओं ने बौद्ध धर्म के भीतर पुरुषों के समान आध्यात्मिक उपलब्धि प्राप्त की। कई थेरियां (बुजुर्ग नन) धम्म की शिक्षिकाएं बनीं।
3. ब्राह्मणिक अनुष्ठान की आलोचना: पुन्ना की ब्राह्मण के स्नान अनुष्ठान की चुनौती बौद्ध द्वारा वैदिक अनुष्ठानों की प्रभावकारिता की व्यापक आलोचना को प्रतिध्वनित करती है। तर्क पूरी तरह तार्किक है: अगर पानी में धोने से पाप शुद्ध होते हैं, तो पानी के प्राणी स्वाभाविक रूप से सबसे आध्यात्मिक रूप से उन्नत होते।
4. महिलाओं की स्वतंत्रता: इन छंदों की रचना करने वाली थेरियां पुरुष अधिकार के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं थीं। वे आध्यात्मिक रूप से स्वतंत्र महिलाएं थीं जिन्होंने अपनी धम्म की समझ को कविता के माध्यम से व्यक्त किया।

निष्कर्ष: थेरिगाथा केवल छंदों का संग्रह से कहीं अधिक है। यह प्रमाण है कि, अपनी सर्वश्रेष्ठ अवस्था में, प्रारंभिक बौद्ध धर्म ने महिलाओं को आध्यात्मिक मार्ग, शिक्षा, समुदाय और आवाज प्रदान किया। यह प्राचीन संसार से महिलाओं के इतिहास का सबसे उल्लेखनीय दस्तावेजों में से एक बना हुआ है।

Q17. What challenges do art historians face when interpreting ancient Indian sculpture? Illustrate with specific examples. उत्तर परिचय: प्राचीन भारतीय मूर्तिकला की व्याख्या एक जटिल और आकर्षक चुनौती है। कला इतिहासकारों को ग्रंथों, परंपराओं और कलात्मक रूढ़ियों के ज्ञान को संयोजित करना चाहिए — और तब भी वे हमेशा निश्चित उत्तर तक नहीं पहुंचते।

चुनौती 1: अपरिचित से जूझना — यूरोपीय पूर्वाग्रह: जब 19वीं शताब्दी के यूरोपीय विद्वान पहली बार भारतीय मूर्तिकला से मिले, तो कई 'विकृत' आकृतियों से भयभीत थे जिनमें कई हाथ और सिर थे, या मानव और पशु रूपों का संयोजन। उन्होंने भारतीय कला को यूनानी मूर्तिकला के मानकों से आंका — जिससे वे परिचित थे। वे उत्तर-पश्चिम (टैक्सिला, पेशावर) से बुद्ध और बोधिसत्व छवियों से उत्साहित थे क्योंकि वे यूनानी मूर्तियों से अधिक मिलती-जुलती लगती थीं। यह ethnocentrism का क्लासिक उदाहरण है — एक संस्कृति की कला को दूसरी के मानकों से आंकना।

चुनौती 2: प्रतीक जो पाठ्य ज्ञान की मांग करते हैं: प्रारंभिक बौद्ध मूर्तिकारों ने बुद्ध को मानव रूप में नहीं दर्शाया। इसके बजाय उन्होंने प्रतीकों का उपयोग किया। बौद्ध जीवनियों के ज्ञान के बिना, दर्शक एक वृक्ष, चक्र, या खाली सिंहासन देखेगा — और उनका अर्थ नहीं समझेगा। कला इतिहासकारों को इन प्रतीकों को डिकोड करने के लिए बौद्ध ग्रंथों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना पड़ा।

चुनौती 3: जब पाठ्य और छवि मेल नहीं खाते: कभी-कभी एक मूर्तिकला एक कहानी को दर्शाती प्रतीत होती है, लेकिन कौन सी कहानी अस्पष्ट है। सबसे प्रसिद्ध उदाहरण तमिलनाडु के महाबलीपुरम में शैल-कट पैनल है। यह

जीवंत पैनल स्पष्ट रूप से एक नाटकीय दृश्य को दर्शाता है, लेकिन कला इतिहासकार तेजी से विभाजित हैं: - कुछ मानते हैं कि यह स्वर्ग से गंगा का अवतरण दर्शाता है — क्योंकि शिला में प्राकृतिक दरार नदी का प्रतिनिधित्व कर सकती है। अन्य मानते हैं कि यह अर्जुन का शिव से हथियार प्राप्त करने के लिए नदी किनारे तपस्या दर्शाता है — महाभारत के आधार पर। दोनों व्याख्याएं पाठ्य प्रमाण से समर्थित हैं। मूर्तिकला स्वयं बहस को हल नहीं करती।

चुनौती 4: लोक परंपराएं जो ग्रंथों में दर्ज नहीं: सभी मूर्तिकला motifs को किसी धार्मिक परंपरा के 'आधिकारिक' ग्रंथों से समझाया नहीं जा सकता। Sanchi में, जेम्स फर्ग्यूसन (जिन्होंने बौद्ध साहित्य नहीं पढ़ा था) ने निष्कर्ष निकाला कि स्थल वृक्ष और सर्प पूजा का केंद्र था — केवल छवियों के आधार पर। वह धार्मिक संदर्भ के बारे में गलत थे, लेकिन motifs के बारे में पूरी तरह गलत नहीं — क्योंकि बौद्ध-पूर्व लोक परंपराएं वृक्ष और सर्प पूजा की बौद्ध कला में एकीकृत थीं।

सबक: कला इतिहास को दृश्य विश्लेषण और पाठ्य विद्वता दोनों की आवश्यकता है। कोई भी अकेला पर्याप्त नहीं है। किसी मूर्तिकला को उसके सांस्कृतिक संदर्भ के बिना नहीं समझा जा सकता; और कोई ग्रंथ हमें नहीं बता सकता कि मूर्तिकला कैसी दिखती है। दोनों को साथ पढ़ना चाहिए।

निष्कर्ष: प्राचीन भारतीय मूर्तिकला की व्याख्या में कला इतिहासकारों द्वारा सामना की गई चुनौतियां हमें एक महत्वपूर्ण सत्य की याद दिलाती हैं: किसी भी संस्कृति की पूरी समृद्धि को केवल जीवित स्मारकों से कभी कैद नहीं किया जा सकता। हम जिन शानदार स्थलों का अध्ययन करते हैं वे, जैसा कि NCERT हमें याद दिलाता है, 'केवल हिमशैल का सिरा' हैं।

Q18. Why did Buddhism grow rapidly during and after the Buddha's lifetime? What values made it attractive? उत्तर परिचय: बौद्ध धर्म उल्लेखनीय गति से बढ़ा — बुद्ध के अपने जीवनकाल के दौरान और उनकी मृत्यु के बाद शताब्दियों में। क्यों समझने के लिए ऐतिहासिक संदर्भ और बौद्ध धर्म द्वारा पेश किए गए विशिष्ट मूल्यों दोनों को देखना आवश्यक है।

ऐतिहासिक संदर्भ: पहली सहस्राब्दी ई.पू. का मध्य गंगा घाटी में तेज सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का समय था। नए राज्य और शहर उभर रहे थे। व्यापार विस्तार कर रहा था। पुरानी सामाजिक व्यवस्था — जिसमें ब्राह्मण पुरोहित सर्वोच्च अधिकार रखते थे और जन्म व्यक्ति की धार्मिक और सामाजिक स्थिति तय करता था — पर सवाल उठाए जा रहे थे। कई लोग 'मौजूदा धार्मिक प्रथाओं से असंतुष्ट थे और उनके आसपास हो रहे तेज सामाजिक परिवर्तनों से भ्रमित थे'।

बुद्ध का दृष्टिकोण — चमत्कार नहीं, तर्क: सुत्त पिटक के अनुसार, बुद्ध ने चमत्कारिक शक्ति के प्रदर्शन के बजाय तर्क और समझाने से लोगों को समझाने का प्रयास किया। एक प्रसिद्ध कहानी: एक शोकाकुल महिला अपने मृत बच्चे को लेकर बुद्ध के पास आई, उनसे बच्चे को वापस जीवित करने को कहते हुए। बुद्ध ने उसे चमत्कार करने के बजाय मृत्यु की अनिवार्यता से सौम्यता से समझाया। इस तार्किक, करुणामय दृष्टिकोण का विशाल आकर्षण था।

मुख्य मूल्य:

1. मेट्टा और करुणा: कमजोर और छोटों के प्रति विशेष रूप से मेट्टा (सहानुभूति) और करुणा (दया) पर जोर ने बौद्ध धर्म को गर्म, मानव-केंद्रित गुणवत्ता दी।
2. व्यक्तिगत एजेंसी: बुद्ध ने सिखाया कि मानव — जन्म की परवाह किए बिना — स्वयं को बदल सकते हैं और अपने प्रयास से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। यह उस समाज में गहराई से सशक्तिकरण था जहां जन्म सब कुछ तय करता था।

3. सामाजिक समानता: संघ सभी सामाजिक समूहों — धनी पुरुषों, शिल्पकारों, महिलाओं, यहां तक कि दासों — से लोगों को स्वीकार करता था और समुदाय के भीतर उन्हें समान मानता था। यह अपने समय के लिए क्रांतिकारी था।

4. व्यावहारिक नैतिकता: सुत्त पिटक दर्शाता है कि बुद्ध व्यावहारिक नैतिक सलाह दे रहे थे — स्वामियों को सेवकों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए, बच्चों को माता-पिता के साथ, छात्रों को शिक्षकों के साथ। बौद्ध धर्म केवल भिक्षुओं के लिए नहीं था — यह गृहस्थों के लिए नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करता था।

5. बुद्ध का सामाजिक संसार का दृष्टिकोण: बुद्ध ने सामाजिक संसार को मानव निर्माण मानते थे, दिव्य रूप से निर्धारित नहीं। इसलिए, इसे बदला जा सकता था। यह ब्राह्मणिक स्थिति से बहुत अलग था, जिसमें वर्ण व्यवस्था को दिव्य रूप से अनुमोदित माना जाता था।

निष्कर्ष: बौद्ध धर्म इतनी तेजी से बढ़ा क्योंकि यह लगभग हर किसी के लिए कुछ पेश करता था: बौद्धिक रूप से झुकाव वाले लोगों के लिए दार्शनिक परंपरा, सामाजिक रूप से हाशिए वाले लोगों के लिए सहायक समुदाय, गृहस्थों के लिए व्यावहारिक नैतिकता, और प्रयास करने को तैयार किसी भी व्यक्ति के लिए मुक्ति का मार्ग। इसका संदेश क्रांतिकारी था, लेकिन करुणा के साथ दिया गया — और वह संयोजन अप्रतिरोध्य साबित हुआ।

Q19. Describe the process by which Buddhist texts were prepared and preserved. उत्तर परिचय: बुद्ध ने मौखिक रूप से सिखाया — चर्चा और बहस के माध्यम से, लिखित ग्रंथों के माध्यम से नहीं। उनकी शिक्षाओं को अंततः कैसे संकलित, लिखित रूप दिया गया और शताब्दियों तक संरक्षित किया गया, यह बौद्ध धर्म के इतिहास को समझने का महत्वपूर्ण भाग है।

मौखिक प्रसारण: बुद्ध के जीवनकाल के दौरान, उनकी कोई भी व्याख्यान लिखी नहीं गई। पुरुष और महिलाएं — शायद बच्चे भी — उनकी प्रवचनों में भाग लेते, सुनते, चर्चा करते और जो सुना उसे याद रखते। यह मौखिक परंपरा बुद्ध की मृत्यु के बाद शायद दो शताब्दियों तक (लगभग 5वीं-4वीं शताब्दी ई.पू.) शिक्षाओं को प्रसारित करने की प्राथमिक विधि थी।

वैशाली में परिषद: बुद्ध की मृत्यु के बाद, उनकी शिक्षाओं को उनके शिष्यों द्वारा 'बुजुर्गों' या वरिष्ठ भिक्षुओं की परिषद में वैशाली (वर्तमान बिहार में) में संकलित किया गया। इन संकलनों को तिपिटक के नाम से जाना गया — शाब्दिक रूप से 'तीन टोकरियां' विभिन्न प्रकार के ग्रंथों को रखने के लिए। इन्हें पहले मौखिक रूप से प्रसारित किया गया, फिर लंबाई और विषय के अनुसार वर्गीकृत किया गया।

तीन टोकरियां: 1. विनय पिटक: संघ में शामिल होने वालों के लिए नियम और विनियम। 2. सुत्त पिटक: बुद्ध की शिक्षाएं। 3. अभिधम्म पिटक: दार्शनिक विषय।

क्षेत्रीय ग्रंथ: जैसे-जैसे बौद्ध धर्म श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया में फैला, अन्य ग्रंथ संकलित किए गए: दीपवंश (द्वीप का इतिहास) और महावंश — बौद्ध धर्म के क्षेत्रीय इतिहास। इनमें से कई ग्रंथों में बुद्ध की जीवनी शामिल थी। सबसे प्राचीन ग्रंथ पाली में हैं; बाद की रचनाएं संस्कृत में।

चीनी यात्री: जब बौद्ध धर्म पूर्वी एशिया में फैला, चीनी यात्री जैसे फा श्यैन और Xuan Zang भारत से मूल ग्रंथों की खोज में चीन से पूरे रास्ते आए। उन्होंने पांडुलिपियां चीन वापस ले गए, जहां विद्वानों ने उनका अनुवाद किया। भारतीय बौद्ध शिक्षक भी चीन गए शिक्षाओं का प्रसार करने।

मठों में संरक्षण: बौद्ध ग्रंथ एशिया भर के मठों में कई शताब्दियों तक पांडुलिपियों में संरक्षित किए गए। आधुनिक अनुवाद पाली, संस्कृत, चीनी और तिब्बती ग्रंथों से तैयार किए गए हैं — बौद्ध विद्या के असाधारण भौगोलिक प्रसार को दर्शाते हुए।

निष्कर्ष: बौद्ध ग्रंथों का संरक्षण सामूहिक प्रयास की उल्लेखनीय कहानी है — हजारों भिक्षुओं द्वारा शिक्षाओं को याद रखना, लिपिकों द्वारा पांडुलिपियों की सावधानीपूर्वक प्रतिलिपि, यात्री द्वारा रेगिस्तानों और पहाड़ों के पार ग्रंथ ले जाना। इस असाधारण संरक्षण परंपरा के कारण हम आज भी बुद्ध के शब्द पढ़ सकते हैं, पच्चीस शताब्दियों बाद जब उन्होंने सारनाथ में एक वृक्ष के नीचे सिखाया था।

Q20. Compare and contrast Jainism and Buddhism in terms of their philosophical ideas and social impact. उत्तर परिचय: जैन और बौद्ध दोनों धर्म पहली सहस्राब्दी ई.पू. के मध्य में ब्राह्मणिक धार्मिक व्यवस्था के लिए चुनौतियों के रूप में उभरे। वे कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं साझा करते थे लेकिन दार्शनिक विचारों और सामाजिक प्रभाव में काफी भिन्न भी थे।

समानताएं:

1. ब्राह्मणिक प्रामाणिकता को चुनौती: महावीर और बुद्ध दोनों ने वेदों की प्रामाणिकता को अस्वीकार किया और जन्म द्वारा व्यक्ति की आध्यात्मिक क्षमता तय होने के विचार पर सवाल उठाया।
2. व्यक्तिगत प्रयास पर जोर: दोनों परंपराओं ने जोर दिया कि मुक्ति को अपने नैतिक प्रयास से प्राप्त करना चाहिए — न कि पुरोहित मध्यस्थता या दिव्य कृपा से।
3. अहिंसा: अहिंसा दोनों परंपराओं में महत्वपूर्ण है। हालांकि, जैन धर्म इसे बहुत अधिक radical हद तक ले जाता है।
4. मठीय समुदाय: दोनों ने भिक्षुओं और ननों के समुदाय स्थापित किए, और दोनों ने महिलाओं को प्रवेश दिया।
5. वैदिक यज्ञ की आलोचना: दोनों ने वैदिक यज्ञ परंपरा को मुक्ति के साधन के रूप में अस्वीकार किया।

अंतर:

1. संसार की प्रकृति: जैन धर्म मानता है कि पूरा संसार सजीव है — यहां तक कि पत्थर और चट्टानों में भी जीवन है। बौद्ध धर्म इतना आगे नहीं जाता; यह संवेदनशील प्राणियों के दुख पर केंद्रित है।
2. अहिंसा: जैन धर्म में अहिंसा सर्वोच्च सिद्धांत है — भिक्षु चलने से पहले जमीन झाड़ते हैं कीटों पर पैर न पड़ जाए। बौद्ध धर्म में अहिंसा महत्वपूर्ण है लेकिन मध्य मार्ग के साथ संतुलित है।
3. कर्म: जैन धर्म में, अनैच्छिक कार्य भी कर्म संचित करते हैं; अतीत कर्म को जलाने के लिए चरम तपस्या आवश्यक है। बौद्ध धर्म में, इरादा (चेतना) मायने रखता है — केवल जानबूझकर कार्य कर्म बनाते हैं।
4. मठीय अस्तित्व: जैन धर्म में, मुक्ति के लिए मठीय अस्तित्व आवश्यक शर्त है। बौद्ध धर्म में, बुद्ध ने स्वयं मध्य मार्ग अपनाया — चरम तपस्या को अस्वीकार किया — और गृहस्थ अनुयायी भी मुक्ति प्राप्त कर सकते थे।
5. प्रसार: बौद्ध धर्म भारत से परे — श्रीलंका, दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन, जापान और कोरिया — फैला। जैन धर्म मुख्य रूप से भारत के भीतर रहा, हालांकि इसने प्राकृत, संस्कृत और तमिल में समृद्ध साहित्यिक परंपराएं पैदा कीं।

सामाजिक प्रभाव: दोनों परंपराओं ने जाति पदानुक्रम को चुनौती दी और अपने मठीय समुदायों के भीतर समानता प्रदान की। दोनों ने महिलाओं को प्रवेश दिया, हालांकि बौद्ध संघ बड़ा और अधिक प्रभावशाली था। बौद्ध धर्म का सामाजिक पहुंच व्यापक था क्योंकि यह गृहस्थ अनुयायियों के लिए अधिक सुलभ था और बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैला।

OM SIKARWAR

निष्कर्ष: जैन और बौद्ध दोनों प्राचीन भारत में ब्राह्मणिक रूढ़िवाद के सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक चुनौती का प्रतिनिधित्व करते थे।जबकि जैन धर्म अधिक कठोर और भारत-केंद्रित परंपरा बना रहा, बौद्ध धर्म विश्व के महान धर्मों में से एक बन गया।दोनों ने, हालांकि, भारतीय विचार, संस्कृति और कला पर गहरे निशान छोड़े जो आज भी बने हुए हैं।

त्वरित पुनरीक्षण चेकलिस्ट (Quick Revision Checklist)

क्रमांक	विषय (Topic)	मुख्य बिंदु (Key Points)
1	**सanchi**	स्थान, खोज (1818), भोपाल की बेगमों की भूमिका, इन सिटू (स्थल पर) संरक्षण, 1989 विश्व धरोहर स्थल
2	**अमरावती**	खोज 1796, वॉल्टर एलियट, एलियट मार्बल्स, एच.एच. कोल का विरोध, विनाश
3	**जैन धर्म**	महावीर, 23 तीर्थंकर, अहिंसा, 5 व्रत, कर्म, मठीय जीवन अनिवार्य
4	**बौद्ध धर्म**	सिद्धार्थ गौतम, 3 दृश्य (बूढ़ा, बीमार, मृत), ज्ञान प्राप्ति, सारनाथ, अनिच्च/अनत्ता/दुख, संघ
5	**संघ**	भिक्षु, भिक्षुणियां, महाप्रजापति गौतमी, थेरिगाथा, विनय पिटक, तिपिटक
6	**स्तूप**	अंड, हरमिका, यष्टि, छत्र, वेदिका, तोरण, दक्षिणावर्त (घड़ी की दिशा में) प्रदक्षिणा
7	**बौद्ध कला**	मानव रूप नहीं, प्रतीक: खाली सिंहासन/चक्र/बोधि वृक्ष/स्तूप/पदचिह्न
8	**महायान**	बुद्ध उद्धारक के रूप में, बोधिसत्व अवधारणा, थेरवाद बनाम हीनयान भेद
9	**वैष्णववाद**	विष्णु, 10 अवतार, भक्ति, पुराण, वासुदेव-कृष्ण
10	**शैववाद**	शिव, लिंग, मानव रूप, दुर्गा, एलोरा का कैलाशनाथ
11	**मंदिर**	गर्भगृह, शिखर, देवगढ़ मंदिर, एलोरा कैलाशनाथ (एक ही शिला से)

सभी परीक्षाओं के लिए शुभकामनाएं! — लगातार पुनरीक्षण करें, चमकते रहें!

OM SIKARWAR